



भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 40] नई दिल्ली, शनिवार, अक्टूबर 7, 1995 (आश्विन 15, 1917)
No 40] NEW DELHI, SATURDAY, OCTOBER 7, 1995 (ASVINA 15, 1917)

(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके)
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

| | | | |
|---|------|--|------|
| भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, प्रादेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं | 857 | भाग II—खण्ड 3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक प्रादेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपलब्धियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्रथिक्त पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं) | * |
| भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकांशियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, कृतियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं | 953 | भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और प्रादेश | * |
| भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और प्रसाधिक प्रादेशों के संबंध में अधिसूचनाएं | 15 | भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, निपत्रक और महानेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं | 939 |
| भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकांशियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, कृतियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं | 1321 | भाग III—खण्ड 2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेंटों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस | 833 |
| भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम | * | भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन श्रवण द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं | - |
| भाग II—खण्ड 1—क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्रथिक्त पाठ | * | भाग III—खण्ड 4—विभिन्न अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं | 1967 |
| भाग II—खण्ड 2—विधेय तथा विधेयों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट | * | भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस | 141 |
| भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिसमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपलब्धियां आदि भी शामिल हैं) | * | भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों की बताने वाला अनुसूचक | * |
| भाग II—खण्ड 3—उप खण्ड (ii) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं | * | | |

CONTENTS

| | PAGE | | PAGE |
|--|------|--|------|
| PART I—SECTION 1— Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court. | 857 | PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)— Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories) | * |
| PART I—SECTION 2— Notification regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court | 953 | PART II—SECTION 4— Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence | * |
| PART I—SECTION 3— Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence | 15 | PART III—SECTION 1— Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India | 939 |
| PART I—SECTION 4— Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence | 1321 | PART III—SECTION 2— Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs | 833 |
| PART II—SECTION 1— Acts, Ordinances and Regulations | * | PART III—SECTION 3— Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners | — |
| PART II—SECTION 1-A— Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations | * | PART III—SECTION 4— Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies | 1967 |
| PART II—SECTION 2— Bills and Reports of the Select Committee on Bills | * | PART IV— Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies | 141 |
| PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)— General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) | * | PART V— Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi | * |
| PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)— Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) | * | | |

भाग 1—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त, 1995

सं० 178-प्रेज/95—राष्ट्रपति, मेजर राजीव कुमार जून (आई० सी०-50443) शौर्य चक्र 22 ग्रेनेडियर्स को (मरणोपरांत) अति असाधारण वीरता के लिए “अशोक चक्र” प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 16 सितम्बर 1994)

मेजर राजीव कुमार जून के नेतृत्व में एक खोजी दल ने 16 सितम्बर 1994 को जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले के आरिजन देवधर गांव में घेराबंदी और खोज कार्य किया।

मेजर राजीव कुमार जून ने 13.00 बजे एक मकान में एक दरवाजे और कमरे की छत के बीच एक दीवार में दो उग्रवादियों को छिपे हुए देखा। उन्होंने इन छिपे हुए आतंकवादियों से बाहर आने के लिए कहा परन्तु वे कमरे में सब तरफ तथा दरवाजे की ओर खड़े इस दल पर गोलीयां चलाते हुए अपने छिपने के स्थान से कूदकर बाहर निकल आए जिससे खोजी दल का एक कार्मिक घायल हो गया।

मेजर राजीव कुमार जून ने स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए अपने खोजी दल को तत्काल आदेश दिया कि वे आतंकवादियों को घेरकर उन्हें उलझाए रखें। इस प्रकार पसे हुए उग्रवादियों ने मकान के तहखाने में छलांग लगा दी और वे एक खुले स्थान से खोजी दल पर भारी गोलीबारी करने लगे। मेजर राजीव कुमार जून ने जब यह महसूस किया कि उनके साथी अपनी जगह से तहखाने में छिपे उग्रवादियों को प्रभावी रूप से नहीं उलझा पा रहे हैं तो वे अपनी जान को भारी जोखिम में डालकर तहखाने की बाहरी ओर बने बचाव मार्ग तक रेंगकर गए और वहां से दो हथभोले फेंके गोलीबारी की जिससे एक पाक प्रशिक्षित दूदात आतंकवादी मारा गया। एक अन्य आतंकवादी तहखाने के किनारे से दोबारा जबर्जस्त गोलीबारी करता रहा।

इसी समय मेजर राजीव कुमार जून अपने साथियों की सुरक्षा के लिए अपनी जान की बाजी लगाने हुए निर्भीकता

से तहखाने के बचाव मार्ग तक पहुंचे ताकि वे उस उग्रवादी को उलझा कर उसकी गोलीबारी को निष्क्रिय कर सकें। इस नजदीकी मुठभेड़ में मेजर जून तथा उग्रवादी एक दूसरे के आमने-सामने आ गए। उस उग्रवादी ने अंधेरे का लाभ उठाते हुए मेजर राजीव कुमार जून पर गोलीबारी की जिससे उनके गले तथा सीने में भारी छोट आई।

मेजर राजीव कुमार जून गंभीर रूप से घायल होने तथा अत्यधिक खून बह जाने के बावजूद वापस नहीं लौटे और अंतिम प्रयास के रूप में तहखाने में सब तरफ गोलीयां चलाई जिससे वह आतंकवादी मारा गया। मेजर राजीव कुमार जून ने अपने अदम्य साहस और बलिदान के इस वीरतापूर्वक कार्य से अकेले ही दोनों सशस्त्र उग्रवादियों की पहचान बाद में हिजबल मुजाहीदीन के स्वयंभू कंपनी कमांडर और जम्मू-कश्मीर के पूर्व कैबिनेट मंत्री के हत्यारे वशीर अहमद पाडार उर्फ नूर-उर हल एक मुश्ताक अहमद खंडे “मुदस्सर” के रूप में की गई। इस कार्रवाई में तीन मैगजिनों सहित दो ए० कै० 56 राइफलें और गोलाबारूद के 22 राउंड भी बरामद किए गए।

इस प्रकार मेजर राजीव कुमार जून ने अदम्य साहस उच्चकौश्ल की वीरता तथा असाधारण कर्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया तथा उग्रवादियों का मुकाबला करते हुए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।

गिरीश प्रधान
निदेशक

सं० 179-प्रेज/5—राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनके उल्लेख्य वीरतापूर्ण कार्यों के लिए उन्हें कीर्ति चक्र प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1 2584167 हवलदार धनराज मुशप्पन
मद्रास। (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 जुलाई 1994)

हवलदार धनराज मुशप्पन 12 जुलाई 1994 को जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले में मोहम गांव की घेरा-

बंदी और तलाशी करने वाले घेराबंदी दलों में एक दल के कमांडर थे।

वे राष्ट्रविरोधी तत्व घेराबंदी में फंसे गए। उन्होंने अलग-अलग दिशाओं में गोलीबारी कर बचने की कोशिश की। वे धान खेत में घुस गए और रेंगकर घास और घने बेलबूटों के नीचे छिपने की कोशिश की। धान का हिलना-कुलना भापकर घेराबंदी दल के कमांडर हवलदार मुशप्पन ने तुरंत बड़ी सूझ-बूझ से खेत में राष्ट्रविरोधी तत्वों को खोजने का इंतजाम किया। खेत से घुसे खोजी दल का नेतृत्व करते समय अचानक ही दो राष्ट्रविरोधी तत्वों में उनकी मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में थोड़े समय तक गोलीबारी चलती रही। इस जवाबी कार्रवाई में हवलदार मुशप्पन गंभीर रूप से घायल हो गए।

गंभीर रूप से घायल होने के कारण लठ्ठलूहान होने के बावजूद हवलदार मुशप्पन असाधारण वीरता एवं शौर्य का प्रदर्शन करते रहे और बिनाकुल भी हताशता नहीं हुए, बल्कि पुरजोर ताकत से उग्रवादियों पर गोलीबारी कर उन्हें वहीं मोत के घाट उतार दिया। परन्तु इस कार्रवाई में उनके सीने पर गोलीयाँ आ लगी जिससे वे वीरगति को प्राप्त हो गए। इस प्रकार उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान कर दिया। इस कार्रवाई में मारे गए उग्रवादियों में दो ए० के०-56 राइफलें, छः मैगजीन और ए० के०-56 राइफल के 82 राउंड तथा एक गिटक घेनेड बरामद किया गया।

इस प्रकार हवलदार मुशप्पन ने असाधारण वीरता अतिथीय साहस और कार्यपरायणता का परिचय दिया।

2. 13742820 लांस हवलदार नेक सिंह,

(शौर्य चक्र,

(मरणोपरांत)

जम्मू कश्मीर राइफल।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 07 अगस्त, 1994)

शौर्य चक्र प्राप्त लांस हवलदार नेक सिंह जम्मू-कश्मीर राइफल की मुख्यालय कम्पनी की दूसरी बटालियन में तैनात थे।

इस बटालियन ने 07 अगस्त 1994 को दीपहर ब्राह्म बजे अनंतनाग जिले की कुलगाम तहसील के हवनपुर तबेला गांव में घेराबंदी शुरू की। इस गांव से एक गश्ती-दल को उक्त तहसील और जिले के खुदाबंद गांव में उग्रवादियों का सामना करने के लिए भेजा गया था।

यह गश्ती दल कुलगाम तहसील में राहपुर गांव के समीप पहुंचते ही उग्रवादियों की ए० के०-56 राइफल की प्रभावी गोलीबारी की चपेट में आ गया जिससे एक सैन्य-कमीशन प्राप्त अप्सर की जांच में बंदूक की गोली लगने से वे घायल हो गए। शौर्य चक्र प्राप्त लांस हवलदार नेक सिंह ही वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने दो उग्रवादियों को गोलीबारी

करने के बाद बचकर भागने की कोशिश करते हुए देखा। उन्होंने तुरंत एक अप्सर के साथ उनका पीछा किया परन्तु इतने में वे गांव की ओर भाग गए। उग्रवादियों ने एककर बीवार के पीछे आड़ ले ली। उनमें से एक उग्रवादी ने उन पर कारगर धंग से गोलीबारी शुरू कर दी। यह भापकर की उनका साथी अप्सर सीधी गोलीबारी की जद में फिर गया है, शौर्य चक्र प्राप्त लांस हवलदार नेक सिंह ने उन्हें एक तरफ धकेल कर उग्रवादियों की भीषण मुठभेड़ में उलझाए रखा और उनमें से एक उग्रवादी को मार गिराया दूसरा उग्रवादी मारे गए उग्रवादी का हथियार उठाकर गोलीबारी करता रहा। इस जवाबी गोलीबारी में शौर्य चक्र प्राप्त लांस हवलदार नेक सिंह के पेट के बाईं तरफ और बाईं जांच में गोली लगने से वे गंभीर रूप से घायल हो गए।

घायल हो जाने से लगातार खून बहते रहने की परवाह किए बिना लांस हवलदार नेक सिंह गोलीबारी करते रहे और असाधारण वीरता और साहस का परिचय देते हुए बचे हुए उग्रवादी के निकट पहुंचकर उसे मार गिराया। इसके तुरंत बाद उनकी बाईं जांच की हड्डी चूर-चूर हो गई और वे जमीन पर गिर गए। उन्हें हेलीकॉप्टर से 92 बेस अस्पताल पहुंचाया गया जहां 15 अगस्त, 1994 को उनकी मृत्यु हो गई।

हवलदार नेक सिंह की शौर्यपूर्ण कार्रवाई से हिजबुल मुजाहिदीन के पाकिस्तान प्रशिक्षण दो खूंखार उग्रवादी मारे गये और एक ए० के०-56 राइफल व गोलाबारूद बरामद हुआ।

लांस हवलदार नेक सिंह, शौर्य चक्र, ने भारतीय सेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप अपनी वैयक्तिक सुरक्षा की परवाह न करते हुए असाधारण वीरता का प्रदर्शन किया।

3. कैप्टन अर्जुन सिंह गुलेरिया,

(आई० सी०-48059),

आटिलरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 6 सितम्बर, 1994)

6 सितम्बर, 1994 को श्रीनगर जिले के दादी नौबाग गांव में घेराबंदी तथा खोज कार्य के दौरान कैप्टन गुलेरिया का दल एक मकान से सज्जालित हथियारों से की जा रही भारी गोलीबारी की चपेट में आ गया। उन्होंने तत्काल मकान में छिपे उग्रवादियों का मकान से निकल भागने का रास्ता बंद कर दिया। तीन उग्रवादी एक दुर्गमजले मकान में छिपे हुए थे और कमरे बदलते हुए लगातार गोलीबारी कर रहे थे। यह गोलीबारी तीन घण्टे तक जारी रही।

कैप्टन गुलेरिया अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तानिक भी परवाह किए बिना प्राकृतिक आड़ तथा भूकौशल का प्रयोग करते हुए रेंगकर मकान तक गए और खिड़की से एक हथगोला अंदर पेंक दिया जिससे तत्काल एक उग्रवादी

मारा गया। शेष दो उग्रवादी पहली मंजिल तक भागे और उनमें से एक ने पहली मंजिल की छिड़की से कैप्टन गुलेरिया पर गोली दागने का प्रयास किया। कैप्टन गुलेरिया ने प्रत्युत्पन्नमति और तीव्र प्रतिनिध्या से उपर देखा और एक उग्रवादी को मार गिराया। उसके बाद ये निचली मंजिल की छिड़की से चढ़कर ऊपर के अन्दर घुस गए और तीसरे उग्रवादी को पकड़कर पहली मंजिल पर ले आए और तत्पश्चात् उन्होंने एक हथगोला कमरे में फेंका। इससे एक उग्रवादी गोलीबारी करता हुआ बाहर भागा। कैप्टन अर्जुन सिंह गुलेरिया ने अति कुशलता तथा अदम्य साहस से अड़ लेकर तीसरे उग्रवादी को भी मार गिराया। मारे गये तीन उग्रवादियों में तीन ए० के०-56 राइफलें, 9 मैगजीने तथा ए० के०-56 राइफल के 70 राउंड बरामद हुए और इन सभी उग्रवादियों की हरकत-उल-अंसार समूह के अपमान विद्रोहियों के रूप में पहचान की गई।

इस प्रकार कैप्टन अर्जुन सिंह गुलेरिया ने उग्रवादियों का मुकाबला करने में अदम्य साहस और उच्चकोटि के सैन्य नेतृत्व का परिचय दिया।

4. 2982680 लांस नायक, (मरणोपरांत)
महावीर सिंह राजपूत,
राजपूत।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 19 सितम्बर, 1994)

19 सितम्बर, 1994 को दो कंपनियों जम्मू-कश्मीर में बारामूला जिले के बुच्छू गांव के इलाके में आतंकवादियों की तलाश कर उनका सामना करने की कार्रवाई में लगी हुई थी। यह गांव राष्ट्रीय राजमार्ग की दक्षिण दिशा में है।

लगभग ग्यारह बजकर पैंतीस मिनट पर मेजर एम० मणिराज की कंपनी बुच्छू गांव के पश्चिम में धान के खेतों में तलाशी के काम में लगी ही थी कि इतने में इन खेतों में छिपे हुए दो आतंकवादी बाहर निकल आए और उन्होंने कंपनी कमांडर के सैन्य दल पर अंधाधुंध गोलियां बरसानी शुरू कर दी। लांस नायक महावीर सिंह राजपूत ने तुरंत अनुकरणीय एवं असाधारण साहस का परिचय देते हुए अपने कंपनी कमांडर और साथी सैनिकों को धक्का देकर गोलीबारी की जद से एक तरफ किया और स्वयं गोलीबारी करने लगे। इस प्रकार उन्होंने अपने कंपनी कमांडर और साथी सैनिकों की जान बचा ली। परंतु इस कार्रवाई में उनके बाएं कंधे पर गोली लग गई। गंभीर रूप से घायल होने के कारण लहलुहान होने के बावजूद लांस नायक महावीर सिंह राजपूत आगे बढ़ते रहे और उन्होंने हिजबुल मुजाहिदीन के दोनों खूंखार आतंकवादियों को निकट से मार गिराया। उन्हें तुरंत 92 बेस अस्पताल पहुंचाया गया जहां उन्होंने धम तोड़ दिया। लांस नायक महावीर सिंह राजपूत की इस वीरता पूर्ण कार्रवाई से हिजबुल मुजाहिदीन के उन छः और खूंखार आतंकवादियों को खदेड़ने में मदद मिली जो

राष्ट्रीय राजमार्ग से गुजर रहे सैन्य कॉफिले पर घात लगाकर हमला करने के लिए मिल बैठकर योजना को अंतिम रूप दे रहे थे।

इस प्रकार, लांस नायक महावीर सिंह राजपूत ने उत्कृष्ट वीरता, असाधारण साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

5. कैप्टन देवाशीष शर्मा (एम० आर०-6368) सेना चिकित्सा कोर (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 10 दिसंबर 1994)

10 दिसंबर, 1994 को जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले के सोपोरे तहसील के डंगरपुरा गांव की घेराबंदी और खोजी कार्रवाई के दौरान एक अफसर के नेतृत्व में कार्यरत खोजी दल उग्रवादियों द्वारा कुछ घरों से की गई गोलीबारी की चपेट में आ गया। परिणामस्वरूप एक अफसर की दाहिनी बाजू में तथा एक एन० सी० ओ० के बाएं हाथ में गोली लग गई। रेजिमेंटल मेडिकल अफसर कैप्टन देवाशीष शर्मा घायलों को वहां से निकालने तथा उन्हें समय पर प्राथमिक उपचार मुहैया करवाने के लिए गोलियों की भारी बौछार की परवाह न करते हुए आगे बढ़े। उग्रवादियों के साथ हो रही गोलीबारी से दो और सिपाही बुरी तरह से घायल हो गए। कैप्टन शर्मा दोनों सिपाहियों को बाहर निकालने तथा प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध करवाने के लिए दोबारा उस गोलीबारी में आगे बढ़े।

उसी दिन बाद में मकान के अंदर छिपे एक उग्रवादी ने अंधाधुंध गोलियां चलाकर भागने की कोशिश की। इस भारी गोलीबारी में कैप्टन देवाशीष शर्मा की बाईं जांघ में गोली आ लगी। साथ ही एक एन० सी० ओ० भी घायल हो गया। कैप्टन शर्मा अत्यधिक खून बहने के बावजूद गोलीबारी के बीच लगभग 20 गज रेंगकर गए, की जा रही गोलीबारी को बंद करवा दिया और भागने की कोशिश कर रहे भाड़े के विदेशी सैनिक को मार गिराया। उन्होंने अपने घायल होने की परवाह किए बिना उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता, चिकित्सा संबंधी आचरण नीति तथा अद्वितीय साहचर्य भावना का परिचय देते हुए घायल एन० सी० ओ० को प्राथमिक म्हायता उपलब्ध कराई। यद्यपि वे स्वयं गंभीर रूप से घायल थे परन्तु फिर भी उन्होंने एन० सी० ओ० को हेलिकाप्टर की पहली उड़ान से रवाना किया जबकि स्वयं हमरी उड़ान से गए—कैप्टन देवाशीष शर्मा को हेलिकाप्टर से 92 बेस अस्पताल ले जाया गया जहां घावों के कारण बाद में उनकी मृत्यु हो गई।

इस प्रकार, कैप्टन देवाशीष शर्मा ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना उत्कृष्ट कर्तव्यपरायणता तथा अद्वितीय सहयोग-भावना का परिचय दिया।

6. जे० सी०—47921 सूबेदार हेम बहादुर थापा, असम
राइफल्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 14 दिसंबर 1994)

14. दिसम्बर, 1994 को सूबेदार हेम बहादुर थापा स्वेच्छा से उस गश्त—दल में शामिल हो गए, जिसकी गणिपुर में जनरल एरिया मनालोक नदी के समीप एन० एम० सी० एन० (एम०) शत्रुओं से भिड़ंत हो गई थी। सूबेदार हेम बहादुर थापा ने तुरंत स्थिति भांपकर शत्रुओं के जंगली मार्च से धाया बोल दिया। इस हाथ में शत्रुओं की गोलीबारी से उनका दाहिना हाथ बुरी तरह जखमी हो गया। इसके बावजूद वे विषम परिस्थितियों में भी अपने हमलावर सैन्य दल को दुश्मन के मार्चों की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। इस हमले में उनके सिर पर अन्य भूमिगत उग्रवादियों की गोली आ गयी जिससे उनके सिर में बहुत ज्यादा खून बहने लगा और वे जमीन पर गिर गए। फिर भी वे हतोत्साहित नहीं दुश्मन के मार्चों पर हमला करने के लिए उठ खड़े हुए। वे लड़ते रहे और धीरे धीरे आगे बढ़कर दुश्मन के ठिकाने पर अपनी एके-47 राइफल्स से गोलीबारी करते रहे। इस प्रकार वे आतंकवादियों के समूहों को नाकाब करते हुए उन पर विद्युत गति से दौड़ाया गया करने के लिए अपने सैन्य दल को प्रेरित करते रहे।

गंभीर रूप से घायल होने के कारण वे दोबारा जमीन पर गिर गए और सैन्य शत्रुओं की ओर बढ़ने लगे। उन्होंने शत्रुओं पर हथगोले फेंके और उनमें से एक उग्रवादी को हार बिना जो उनका हथियार छीनने के उद्देश्य से उन पर हमला करने लगा था। उनके अग्रिम साहस से उग्रवादी आतंकित होकर अपनी ठिकाना छोड़ने के लिए मजबूर हो गए और भारी मात्रा में तम्र गोलाबारी, उग्रवाद, आपत्तिजनक दस्तावेज और भारी दो भारी आतंकवादियों के शस्त्रों सहित उनके शव छोड़कर भाग गए।

इस प्रकार, सूबेदार हेम बहादुर थापा ने आधाधारण वीरता का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान किया।

7० नं० 8025434 एच० नायक (जी० डी०) भीम सिंह
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 24 मार्च 95)

नायक भीम सिंह को उत्तरी त्रिपुरा के विद्रोह प्रभावित क्षेत्र में मनु-कंचनपुर पड़क पर कार्यरत सीमा पड़क संगठन के कार्यकों की सुरक्षा के लिए तैयार किया गया था।

24 मार्च, 1995 को सुबह लगभग 9 बजे नायक भीम सिंह एक राह पर लगी हल्की वर्षा में तैयार थे। वह बाहन जब दो पहाड़ियों के बीच गहन जंगल मार्ग में गुजर रहा था तभी वह सभी ओर से स्वचालित हथियारों से की जा रही भारी गोलीबारी में घिर गया। गोलीबारी की पहली बौछार बाहन के टायरों पर पड़ी और साथ ही गोलीबारी के प्रहार में नायक भीम सिंह की आंखें भी बाहर आ गईं। अभय दर्द और भारी रक्तस्राव की परवाह न करते हुए उन्होंने दोनों पहाड़ियों की ओर जवाबी-गोलीबारी की। जैसा ही उनका बाहन रुका, उन्होंने यह महसूस

किया कि प्रत्येक विद्रोही नीचे बैठ गया है। तथापि अपनी जगह नहीं छोड़ी और अपने साथियों को बाहन में बाहर कूदकर मोर्चा लेने के लिए प्रेरित करते हुए उनकी सहायता गोलीबारी करते रहे। उनके इस प्रकार साहस दिखाने से उनके साथियों में उत्साह उमड़ पड़ा। नायक भीम सिंह ने विद्रोहियों को अपने प्रयासों से लगातार उलझाए रखा जिससे उन्हें अपने दल को उन्नेजित करके उनसे गोलीबारी करवाने का कीमती समय मिल गया। गोलीबारी की दूसरी बौछार में उनका दायां हाथ जखमी हो गया परन्तु इससे अभयित हुए बिना दो बार घायल हो चुके नायक भीम सिंह ने लाइट मशीनगन में नई भर दी सैगजीन लगा ली। उसी समय उन भारी सैगजीन पर गोलीबारी आरंभ से घटना स्थल पर ही उनकी मृत्यु हो गई।

नायक भीम सिंह ने अपने साथियों की सुरक्षा के लिए अपनी सुरक्षा की तकनीक भी परवाह न करते हुए वीरता, अदम्य साहस, अटल कर्तव्यपरायणता, प्रयत्नशीलता एवं उत्साह का परिचय दिया। उन्होंने विद्रोहियों को न केवल साथ देने के लिए मजबूर कर दिया बल्कि यह भी ध्यान रखा कि उनका कोई भी साथी घायल न होने पाए।

इस प्रकार, नायक भीम सिंह ने आधाधारण कर्तव्यपरायणता एवं उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन करते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया।

गिरिश प्रधान
निदेशक

सं० 180-धेअ०/95 राष्ट्रपति, जे० सी०—225838
नायक सूबेदार अन्नार सिंह, 14 बिबू एन० डेक्करी को (मरणोपरान्त) उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए उन्हें “वीर चक्र” प्रदान किए जाने का सर्वोच्च अनुमोदन करते हैं।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 22 मार्च, 1994)

नायक सूबेदार अन्नार सिंह भजन चौकी का चौकी कांडर थे। 22 मार्च, 1994 को वार्षिक निष्पन्न सेवा के उपरान्त स्थित शत्रु पक्ष की चौकी में उपस्थित जाते हुए अज्ञात और अत्यंत शक्तिशाली हथियारों से भजन चौकी पर गोलीबारी की गई। इस चौकी से जबरदस्ती निष्काशन किए जाने के शत्रु के लक्ष्य को भांपते हुए नायक सूबेदार अन्नार सिंह ने अपने साथियों को प्रेरित कर उनमें अपेक्षित साहस जूझाया और इस स्थिति से निपटने के लिए कार्य पर लगाया। वह चौकी एक गड्ढान बनी रही और निरंतर शत्रु को मुकाबला पेशवाती रही जिसके फलस्वरूप वहां से निरीक्षणपूर्वक निगरानी होनी रही। भजन चौकी सहित वाली शत्रु पक्ष की गोलीबारी को रोकने के लिए उनकी स्पर् चौकी पर गोलीबारी करने की योजना बनाई गई। इसके वास्ते आवश्यक हथियार जमा किए गए। नायक सूबेदार स्वेच्छा से एक ही कांडर बनने को तैयार हुए। उनके दिशा-निर्देश और नेतृत्व में उस टुकड़ी ने कार्रवाई की और सुव्यवस्थित गोलीबारी करके शत्रु की चौकी को नष्ट कर

दिया। चौथे दिन तक शत्रु की शरण चौकी मलबे का ढेर बन चुकी थी। पांच बंकर नष्ट हो चुके थे और शत्रु सैनिक अन्तिम बंकर में छिपे हुए थे। हताश होकर शत्रु पक्ष ने भजन चौकी के ग्राम-गाम वाली आती चौकियों में सभी उपलब्ध हथियारों गोलीबारी शुरू कर दी। नायब सूबेदार अब्दुल मिह और उनके प्रेरित दुकड़ी अपने काम में लगी रही। जैसे ही अन्तिम बंकर टूटने लगा तो शत्रु की शरण से होने वाली गोलीबारी से बृद्धि हो गई। 0850 बजे नायब सूबेदार अब्दुल मिह जिम समर्थ अन्तिम बंकर तोड़ने ही वाले थे कि उसी समय शत्रु द्वारा भारी हथियार से किया गया बार उन्हें आ लगा। गोलियों ने अब्दुल मिह का गला छलनी कर दिया। इस प्रकार साहसी जूनियर कमीशन प्राप्त अफसर ने देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

इस प्रकार नायब सूबेदार अब्दुल मिह ने दुश्मनों का सामना करने में उत्कृष्ट साहस तथा वीरता का प्रदर्शन किया।

गिरीश प्रधान
निदेशक

सं० 181-प्रेज 95 राष्ट्रपति नायक जरदीश अहमद (2676892) शौर्य चक्र मेनेडियर्स को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए उन्हें "शौर्य चक्र का बार" प्रदान किए जाने के लिए सहर्ष अनुमोदन करते हैं।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 14 अगस्त 1994)

14 अगस्त, 1994 को जम्मू कश्मीर के अनंतनाग जिले के समीर गांव में घेराबंदी एवं खोज कार्य के दौरान गांव के उत्तर में एक पहाड़ी के ऊपर कुछ संदिग्ध गतिविधि का पता चला। इस पर वहां तुरंत ही दो दल भेजे गए और जब ये दल बिना आहूट किए 100 मीटर तक पहुंचे तो पांच उग्रवादियों के एक दल ने उन पर गोलीबारी कर दी। भारी गोलीबारी के बावजूद नायक जरदीश अहमद अन्य चार उग्रवादियों के भागने में सुरक्षा प्रदान कर रहे एक उग्रवादी के पास पहुंचे और उसे मार गिराया। इस दल पर अन्य उग्रवादियों ने दो हथगोले फेंके तथा अलग-अलग दिशाओं में भागने का प्रयास किया।

नायक जरदीश अहमद तुरन्त आगे बढ़े और अदम्य साहस का परिचय देते हुए, शायद मीटर तक रेंगकर उन उग्रवादियों के पास पहुंचे जो शिलाखंडों के पीछे से भारी गोलीबारी कर रहे थे। उग्रवादियों ने नायक जरदीश अहमद पर दो और हथगोले फेंक कर स्वचालित गोलीबारी का काम कर दी। यद्यपि उग्रवादियों की संख्या अधिक होने तथा ऐसे गंभीर जोखिम के बावजूद बहादुर नायक अहमद रेंगकर उग्रवादियों तक पहुंचे तथा तीन उग्रवादियों को घायल कर दिया। दुर्दैवत मशस्त्र उग्रवादियों ने अपने अन्तिम प्रयास में एक और हथगोला फेंका तथा भयभीत होकर गोलीबारी की। नायक जरदीश अहमद बिना कोई क्षण गंवाए लड़कर नजदीक के महत्वपूर्ण सुरक्षित स्थान पर गए और थोड़ा आगे जाकर पाकिस्तान प्रशिक्षित तीनों दुर्दैवत उग्रवादियों को मार गिराया।

उनके इस वीरतापूर्ण कार्य से 4 ए० के 56 राइफलें, 10 मैगजीनों, गोलाबारूद के 48 राउंड तथा 2 हथगोले भी बरामद हुए।

इस प्रकार नायक जरदीश अहमद शौर्य चक्र ने उग्रवादियों का मुकाबला करने में उत्कृष्ट योग्यता, साहस तथा कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

गिरीश प्रधान
निदेशक

सं० 182-प्रेज/95- राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :-

कैप्टन डी पद्मा कुमार पिल्ले (आई सी-47634), गाईस (पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 25 जनवरी 1994)

कैप्टन डी पद्मा कुमार पिल्ले को 25 जनवरी, 1994 को मणिपुर के तामेंगलॉग जिले में लौंगदीपन्नम गांव में उग्रवादियों की खोज करने का काम सौंपा गया था। खोज कार्य 25 जनवरी, 1994 को भोर की पहली किरण निकलते ही शुरू कर दिया गया। खूंखार नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नगालैंड (आई) के उग्रवादी एक भूकान में शरण लिए हुए थे। कैप्टन पिल्ले ने सूबेदार रघुवीर सिंह और उनके 40 अन्य रैंकों के गश्ती दल को साथ लेकर उग्रवादियों को अंचभे में डालते हुए उनकी कारगर घेराबंदी कर दी। कैप्टन पिल्ले ने गुरदासमान गम्भीर के साथ मिलकर दरवाजा तोड़कर खोल दिया और ए० के० 47 गोलियां दाग दी। उग्रवादियों ने भी इन पर एक हथगोला फेंका। कैप्टन पिल्ले के पैर में हथगोले की किरच लगने से ये घायल हो गए। इस अफसर ने हिम्मत से आगे बढ़कर हमला किया परंतु इस प्रतिक्रिया में उनकी बाजू और सीने पर गोली से दो घाव हो गए। कैप्टन पिल्ले ने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए रेंगकर एक झाड़ू ले ली और उग्रवादियों का मुकाबला करने लगे। उन्होंने एक हथगोला निकालकर उस भूकान में फेंका कैप्टन पिल्ले गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उग्रवादियों से दृढ़तापूर्वक लड़ते रहे और अपने जवानों को उग्रवादियों से आत्मसमर्पण करवाने के लिए प्रेरित करते रहे। ये जमीन पर तभी गिरे जब इन्होंने अपना कार्य पूरा कर लिया। इस संक्रिया की सफलता से सेना को विद्रोहियों पर नैतिक विजय हासिल करने में सहायता मिली।

इस प्रकार कैप्टन डी पद्मा कुमार पिल्ले ने आतंकवादियों से मुकाबला करने में असाधारण नेतृत्व के गुणों और अदम्य साहस का परिचय दिया।

2. 4171086 सिपाही निशान सिंह, सिख लाइट इन्फैंट्री (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 मार्च, 1994)

जम्मू कश्मीर के अर्धनंगा जिले के दक्षिण में स्थित दोरुकम्बे में 15 मार्च 1994 को घेराबंदी एवं खोज कार्य शुरू किए गए थे। सैन्यदल पर दाजारा, कुछ झोपड़ियों और पहाड़ी के ऊपर से भारी गोलीबारी की गई। उसके बाद दोनों पक्षों के बीच हुई भारी गोलीबारी के दौरान राष्ट्रविरोधी तत्व बाजार में भागकर झोपड़ियों के समूह और पहाड़ी के ऊपर की ओर भाग गए। एक कंपनी को झोपड़ियों के समूह को घेरने का आदेश दिया गया। सिपाही निशान सिंह कंपनी उम कंपनी मुख्यालय के साथ थे जो झोपड़ियों के समूह के सबसे पहले पहुंचे थे। घेराबंदी के दौरान सिपाही निशान सिंह का मुकाबला अचानक एक सशस्त्र राष्ट्र विरोधी तत्व से हो गया जो उनके कमान अफसर और साथियों पर गोलीबारी करने ही वाला था। वह बहादुर सिपाही पूर्णतः निस्वार्थ निष्ठापूर्वक उस दिशा में धौड़ा जिधर से गोलीबारी की जा रही थी और अपने कमान अफसर तथा साथियों को बचाते हुए स्वयं उपवादियों की गोलीबारी का निशाना बन गए। तत्पश्चात गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने उपवादी पर हमला करके उसे मार गिराया। बाद में पता चला कि वह भाड़े का सिपाही नियाज मोहम्मद था। बाद में सिपाही निशान सिंह का घावों कारण देहावसान हो गया।

इस प्रकार सिपाही निशान सिंह ने अपने प्राणों को बाजी लगाकर अपने साथियों की जान बचाने में वीरता एवं निःस्वार्थ कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

3. कैप्टन अरविन्द विक्रम सिंह (आई० सी० 51145), गढ़वाल राइफलस (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख - 25 मई, 1994)

गढ़वाल राइफलस के कैप्टन अरविन्द विक्रम सिंह ने 22-23 मई, 1994 की रात को ऐसे राष्ट्र विरोधी तत्वों को छानबीन करने के लिए जम्मू कश्मीर में पहलवानबूसन खुई को जाने वाली घात टुकड़ी का नेतृत्व करने के लिए स्वयं को पेश किया जो अंधेरे में सुरक्षित ढंग से घुसते रहते हैं।

22 मई, 1994 को रात को 10 बजकर 30 मिनट पर पहलवान गांव की तरफ से तीन व्यक्तियों की संदिग्ध अवस्था में घुसते हुए देखा गया। इस अफसर ने राष्ट्र विरोधी तत्वों को घात टुकड़ी के केन्द्र तक आने का अवसर दिया और उसके बाद की गई गोलाबारी में उसमें से एक को मार गिराया। अन्य राष्ट्र विरोधी तत्वों ने बड़े पैमाने पर गोलाबारी की और सैनिकों को निकट आने से रोकने के लिए उन्होंने बहुत निकट से हथगोले फेंके परन्तु इसके बावजूद कैप्टन अरविन्द विक्रम सिंह और उनका सैन्यदल इससे विचलित नहीं हुए और उन्होंने अदम्य साहस का परिचय देते हुए एक और राष्ट्र विरोधी तत्व को मार गिराया तथा अन्य सशस्त्र उपवादियों को जीवित पकड़

लिया। दो ए०के० 56 राइफल और छः मगजीन, एक ग्रेनेड तथा 147 राउंड बरामद किए गए।

7 जुलाई 1994 को शाम लगभग 7 बजकर 20 मिनट पर हथान गांव में कारवाई किए जाने के बाद सिन्धु नदी पर काम चलाऊ तौर पर बने तीन फुट चौड़े लकड़ी के पुल को पार करने समय राइफलमैन दिगम्बर सिंह अपना संतुलन खो बैठे और सिन्धु नदी के तेज प्रवाह में गए। कैप्टन अरविन्द विक्रम सिंह अपनी कंपनी के जवानों को बचाने के लिए नदी में की तेज बहती हुई धारा में कूद पड़े। नदी में पड़े विशाल शिलाखण्डों के अवरोधों का सामना करते हुए वे राइफलमैन दिगम्बर सिंह को पकड़ने में सफल हो गए और उन्हें सुरक्षित स्थान पर लाने का प्रयास करने लगे परन्तु ऐसा करते हुए वे नदी में बह गए और इस प्रकार उन्होंने अपने जीवन का बलिदान दिया।

इस प्रकार कैप्टन अरविन्द विक्रम सिंह ने प्रेरक नेतृत्व वीरता, कर्तव्य परायणता और आत्मबलिदान की भावना का परिचय दिया।

4. मेजर मनोज नटराजन (आई० सी०- 47064), 10 बिहार

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 जून, 1994)

18 जून, 1994 को 10 बिहार ने आधी रात के समय शाहबंद गांव की घेराबंदी की। दोपहर लगभग 12 बजे दो उपवादियों ने घेराबंदी तोड़कर भागने का प्रयास किया। मेजर मनोज नटराजन की कम्पनी ने उन उपवादियों का पीछा किया। दोनों उपवादी दौड़कर एक मकान में घुस गए जिन्हें तुरन्त ही मेजर नटराजन और इनकी कम्पनी के छह जवानों ने घेर लिया। जैसे ही मेजर मनोज अपने दल सहित उस मकान के निकट पहुंचे, उन पर भीतर से भारी गोलीबारी की जाने लगी। मेजर मनोज ने मकान के और निकट जाकर एक हथगोला फेंका। जिससे उपवादी मजबूर होकर छिडकी से बाहर कूदकर नीनागली के पेड़-पौधों की ओर दौड़े। इससे उनके दल को दोनों उपवादियों से उस क्षेत्र को मुक्त कराने का अवसर मिल गया।

दोपहर बाद 3 बजे मेजर मनोज अपने दल के साथ एक अन्य मकान की ओर दौड़े जहां दो उपवादी छिपे हुए थे। जैसे ही मेजर नटराजन मुख्य दरवाजे की ओर दौड़े, उनके दल पर भारी गोलीबारी होने लगी। मेजर मनोज नटराजन ने राष्ट्रविरोधी तत्वों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा परन्तु उन्होंने दोबारा से उनके दल पर गोलीबारी की। मेजर मनोज नटराजन अपनी सुरक्षा की तकनीक भी परवाह न करते हुए उस मकान में घुस गए। तभी राष्ट्र-विरोधी तत्वों ने उन पर एक हथगोला फेंका परन्तु होशियारी से कार्रवाई करने के बावजूद मेजर नटराजन को दाहिनी आंख में एक किरच आ गयी। हालांकि उन्हें कुछ क्षण के लिए दाहिनी आंख से दिखाई देना बन्द हो गया था फिर भी इस अफसर ने अपने दल के जवानों को किसी गंभीर क्षति के बिना भयानक आतंकवादी अल बर्क के एरिया कमांडर और उसके साथी को मार गिराया।

मात्र चार घंटों में मेजर मनोज नटराजन ने चार आतंकवादियों अर्थात् एक एरिया कमांडर, एक कम्पनी कमांडर, सेक्शन कमांडर और एक रेडियो ऑपरेटर का काम तमाम कर दिया और उनसे दो ए०के०-56 राइफलें ए० के०-56 राइफल की पांच मैग्जीनें, ए०के०-56 के गोलाबारूद के 119 राउण्ड, एक स्टिक ग्रेनेड, एक रेडियो सेट और 30 कि० ग्रा० विस्फोटक बरामद किया।

इस प्रकार मेजर मनोज नटराजन ने चार दुर्घात आतंक-वादियों को मार गिराने में असाधारण बीरता और नेतृत्व का परिचय दिया।

5. जे०सी०-188619 सूबेदार मायन गोपाल, मद्रास (मरणो-परात)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 जून, 1994)

सूबेदार मायन गोपाल ने 8 जून, 1994 को दिन में जम्मू-काश्मीर के पुलवामा जिले के करीमाबाद गांव में एक आतंक दुर्घात उग्रवादी के घर पर छापा मारा। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिंता किए बिना उन्होंने अत्यन्त सावधानीपूर्वक तेजी से मकान में घुसकर उस मकान में छिपे व्यक्तियों को आश्चर्य चकित कर दिया और एक भी गोली चलाए बिना 4 1/2 घंटे की तलाशी के बाद दो राकेट प्रणोदित ग्रेनेड लांचर बरामद किए।

18 जून, 1994 को पुलवामा जिले के रोमू आंव की घेराबंदी और तलाशी के दौरान एक बार फिर एक नाले के साथ-साथ सदेहा-त्पद गर्तविक्षिप्त देखकर सूबेदार मायन गोपाल कम्पनी कमांडर के आदेशों पर उग्रवादियों को पकड़ने के लिए नाले से जुड़े हुए उच्च मैदान पर गए। सूबेदार का पार्टी और उग्रवादी साथ-साथ ही उस ऊँचे मैदान पर पहुँचे। सूबेदार ने भीषण स्वचालित गोलीबारी के बीच उग्रवादियों पर की जा रही गोलीबारी का नेतृत्व किया और उनमें से एक उग्रवादी को मार गिराया। शीघ्र रूप से घायल होने के बावजूद वे एक अन्व उग्रवादी का पीछा करते रहे।

वे आतंकवीर बीरता और साहस का प्रदर्शन करते हुए एक उग्रवादी की ओर बढ़े जो छोटों से नाले में छिपा हुआ था। अत्यन्त निकट आ जाने पर उग्रवादी उठ खड़ा हुआ जिससे वे दोनों आमने-सामने हो गए और उन दोनों ने एक साथ एक दूसरे पर गोलियाँ चला दीं। सूबेदार मायन गोपाल ने उग्रवादी को मार गिराया किन्तु इस गोली युद्ध के दौरान बुझा उनके गले में गोलियाँ लगीं जिससे वे उसी समय वीरगति को प्राप्त हुए। बचे-बचे उग्रवादियों का सफाया किए जाते समय दो राइफलें, ग्रेनेड लांचर अटैचमेंट एकत्रित गोलाबारूद की विशाल मात्रा सहित दो पिस्तौलें और युद्धक भंडार जैसे सामान के साथ-साथ उग्रवादियों के दो शव भी बरामद हुए।

इस प्रकार, सूबेदार मायन गोपाल ने बीरता, कर्तव्यपरायणता तथा आत्मबलिदान की भावना का परिचय दिया।

6. मेजर रणवीर सिंह (आई० सी०- 41244), आटिलरी

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 28 जुलाई, 1994)

28 जुलाई, 1994 को 12 दोहू एवं प्रेक्षक उड़ान के अफसर कमांडिंग ने मेजर रणवीर सिंह को बेकिरा "हिंसावत" और 2-271 GI/95

संश्रिया "आरचिड" के दौरान हताहतों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के लिए सह पायलट कैप्टन आर० एस० मलिक के साथ वायुयान जैड-391 के कमान पायलट के रूप में तैनात किया था। इन्हें धर्मर के सामान्य क्षेत्र में चल रही घमासान सैन्य कार्रवाई के दौरान पांच युद्ध हताहतों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने का काम सौंपा गया था। हताहतों को एक ऐसे अत्यंत दुर्गम स्थान से निकाल जाना था जहाँ पर छोटा सा जंगल था इसलिए वायुयान उतारने के लिए उसका सफाया कर दिया गया। इन्होंने अपनी उच्चतरीय व्यावसायिक कुशलता का परिचय देते हुए पहले उड़ान चक्र में तीन हताहतों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया परन्तु इस कार्रवाई के दौरान किसी भूमिगत व्यक्ति ने हेलिकाप्टर पर फायर कर दिया इन्होंने तुरन्त मशीन के सभी मानदण्डों की जाँच की और उन्हें ठीक पाकर हताहतों को चालवा तक पहुंचाना शुरू कर दिया। यह भलीभाँति जानते हुए कि वायुयान पर फिर से फायर किया जा सकता है कि फिर भी वे मीठा स्वाद में हताहत हुए दो व्यक्तियों को संश्रियात्मक क्षेत्र से निकाल कर सुरक्षित स्थान पर ले जाने में संकटे रहे। इतने में इन्हें एक विचार सूझा और इन्होंने अपरस्पर गत उड़ान तकनीकों का प्रयोग कर हताहतों को सुरक्षित हवाई मार्ग से चक्रवर्ती में उतारने के लिए उड़ान भरी ताकि वहाँ पर वायु-यान के शीघ्र रूप से क्षतिग्रस्त होने की जाँच किए जाने के साथ-साथ हताहतों का प्राथमिक उपचार भी किया जा सके। उड़ान के बाद जाँच करने पर पायलट को पता चला कि मुख्य हेंटर ब्लेडों में से एक में गोली लगने से छेद हो गया। वायुयान के क्षतिग्रस्त हो जाने के बावजूद वे अपने मिशन का कार्य करते रहे।

इस प्रकार मेजर रणवीर सिंह ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिंता भी परवह किए बिना बीरता, दृढ़संकल्प तथा कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

7. सेकंड लेफ्टिनेंट विपिन भाटिया (आई०सी०-52877)
(सेना प्राप्ति कोर)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 28 जुलाई, 1994)

28 जुलाई, 1994 को विशेष सूचना मिलने पर 27 राजपूत ने रोबान गांव में घेराबंदी एवं खोज कार्य किए। दोपहर बाद लगभग 2 बजकर 15 मिनट पर जब कमान अफसर का तीव्र प्रतिक्रिया दल और एक कंसो रोबान गांव में पहुंचे तो उग्रवादियों ने यूनिवर्सल मशीन गन और ए०के० राइफलों से उन पर भारी गोलीबारी की।

सेकंड लेफ्टिनेंट विपिन भाटिया ने गोलीबारी कर रहे उग्रवादियों पर काबू पाने के लिए तुरन्त अपनी प्लाटून को संगठित किया। सेकंड लेफ्टिनेंट विपिन भाटिया अपनी प्लाटून का आगे रहकर नेतृत्व करते और अपनी सुरक्षा की रचना परवाह न करते हुए स्वयं आगे बढ़े तथा उग्रवादियों द्वारा निरंतर की जा रही गोलीबारी के बावजूद उनके निकट पहुंच गए। बीरता और कुशल नेतृत्व का

परिचय देते हुए सेकंड लेफ्टिनेंट विपिन भाटिया ने एक कुख्यात उग्रवादी को मार गिराया और उससे एक ए०के० 56 राइफल बरामद की। मृतक उग्रवादी ए०जे०एफ० का कंपनी कमांडर भी था। गोलीबारी के दौरान सेकंड लेफ्टिनेंट विपिन भाटिया दोनों जांचों में गोलियां लगने से घायल हो गए। चोटों से भयभीत हुए बिना वे निरंतर भागे बढ़ते रहे और एक अन्य पाक प्रशिक्षित बुद्धिमान उग्रवादी को मार गिराया तथा उससे एक ए०के० 56 राइफल बरामद की। उस दिन की कार्रवाई में उग्रवादी संगठन एम जे एफ के एक बटालियन कमांडर एवं एक कंपनी कमांडर सहित छह उग्रवादी मारे गए और उनसे भारी मात्रा में गोलाबारूद बरामद किया गया।

इस प्रकार सेकंड लेफ्टिनेंट विपिन भाटिया ने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए उल्लूखित और कुशल नेतृत्व का परिचय दिया।

8. 3100546 राइफलमैन नारायण सिंह, असम राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 28 जुलाई, 1994)

“ब्लू हिल संक्रिया” के दौरान राइफलमैन नारायण सिंह मणिपुर के नथेमब्रम गांव में सुदृढ़ किलाबंदी करके बनाए गए नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंड (इस्ताक/न्यूबा) एन एस सी एन के प्रशिक्षण शिविर पर छापा मारने वाले छापामार दल के एक सदस्य थे। 28 जुलाई, 1994 को छापामार दल के अग्रणी सदस्यों पर सुदृढ़ किलेबंदी बंकर में सामरिक दृष्टि से सुविधाजनक स्थिति में छिपे हुए भूमिगत विद्रोहियों द्वारा ग्रेनेड और स्वचालित हथियारों से की जा रही भीषण गोलीबारी पर काबू पाना था। ऐसी स्थिति में राइफलमैन नारायण सिंह ने अनुकरणीय साहस का परिचय देते हुए अपनी सुरक्षा की चिंता भी छोड़कर बिना बंकर पर धावा बोल दिया और मुख्य द्वार पर तब तक गोलियां चलाते रहे जब तक कि ग्रेनेड फटने के कारण वे गंभीर रूप से घायल नहीं हो गए। बाद में घावों के कारण 01 अगस्त, 1994 को उनकी मृत्यु हो गई। इस अनुकरणीय कार्यवाई से सफलतापूर्वक छापा मारकर अंततः बंकर को भूमिगत विद्रोहियों के जूँगल से छुड़ाने में सहायता मिली जिससे नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंड (इस्ताक/न्यूबा) के नौ भूमिगत विद्रोही मारे गए तथा भारी मात्रा में गोलाबारूद सहित 22 अत्याधुनिक हथियार बरामद किए गए।

इस प्रकार, राइफलमैन नारायण सिंह ने अद्वितीय साहस, कर्तव्यपरायणता और आत्मबलिदान की भावना का परिचय दिया।

9. 3100818 राइफलमैन प्रसिधन सिंह, असम राइफल (मरणोपरांत)
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 28 जुलाई, 1994)

“ब्लू हिल संक्रिया” के दौरान राइफलमैन प्रसिधन सिंह मणिपुर के थेमब्रम गांव में सुदृढ़ किलाबंदी करके बनाए गए नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंड (इस्ताक/न्यूबा) (एन एस सी एन) के प्रशिक्षण शिविर पर छापा मारने वाले छापामार दल के एक सदस्य थे। 28 जुलाई, 1994 को प्रातः साढ़े पांच बजे छापामार दल जैसे ही नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंड के शिविर के नजदीक पहुंचा तो सुदृढ़ किलेबंदी बंकर में बेहतर स्थिति में छिपे हुए भूमिगत विद्रोहियों की ओर से की जा रही ग्रेनेड और स्वचालित शस्त्रों की भारी गोलीबारी में उसके अग्रणी सदस्य घिर गए।

ऐसी नाजुक स्थिति के समय राइफलमैन प्रसिधन सिंह ने गोलियों की बीछारों और हथगोलों के धमाकों के बीच ती ठलाकड़न पर रेंगते हुए और अनुकरणीय साहस तथा अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की इंचनाम भी परवाह न करते हुए बंकर के मुख्यद्वारों पर जवाबी गोलीबारी करते हुए बंकर में छिपे हुए भूमिगत विद्रोहियों में से एक को मार गिराया। तथापि, इस साहसिक कार्रवाई में राइफलमैन प्रसिधन सिंह को एक ए०के० 47 राइफल की गोलियों की बीछार से घाई जांच तथा कूले पर गोली लगी जिसकी वजह से वह गिर पड़े। अत्यधिक खून बहने तथा शक्ति के क्षोभ हो जाने के बावजूद मातृभूमि के इस बौर सपूत ने अंतिम सांस तक बंकर पर गोलीबारी जारी रखी। इस अनुकरणीय कार्रवाई ने उनके दल को समग्र प्रेरणा दी जिसके परिणाम स्वरूप बंकर में छिपे विद्रोहियों का सनाया कर छापा मारने की कार्रवाई सफल हुई जिसमें नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंड (इस्ताक/न्यूबा) के नौ भूमिगत विद्रोही मारे गए तथा बाईस अत्याधुनिक शस्त्रों सहित बड़ी मात्रा में गोलीबारूद बरामद किया गया।

इस प्रकार, राइफलमैन प्रसिधन सिंह ने अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और भूमिगत विद्रोहियों का मुकाबला करने में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया।

10. 2684649 ग्रेनेडियर पंजकु लाल, ग्रेनेडियर्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 3 अगस्त, 1994)

3 अगस्त, 1994 को ग्रेनेडियर पंजकु लाल को हम्मू खोकी के दक्षिण में घात लगाने के लिए भेजा गया था तार्किक राष्ट्रविरोधी तत्वों के दरपुरा गांव की ओर जाने से रोकना था सके, जहां वे बार-बार आया-जाया करते थे।

लगभग 20.40 बजे ब्रेनेडियर पंजकु लाल ने देखा कि चार राष्ट्रविरोधी तत्वों का दल इनके ठिकाने की ओर आ रहा है जिन्होंने तत्काल अपनी पार्टी के कमांडर को सचेत कर दिया। पंजकु लाल ने तब तक प्रतीक्षा की जब तक कि आतंकवादी इनके ठिकाने के लगभग 15 गज की दूरी तक न आ गए और फिर गोली चलाकर उनमें से एक को वहीं डेर कर दिया। परन्तु इनके द्वारा चलाई गई एक गोली उस ब्रेनेड से जा टकराई जिसे आतंकवादी ले जा रहे थे। उस ब्रेनेड के फट जाने से एक छरी ब्रेनेडियर पंजकु लाल की छाती में जा लगा। इस बीच शेष राष्ट्रविरोधी तत्वों ने अंधेरे का प्रायदा उठाते हुए भागने के प्रयास में स्वचालित शस्त्रों से भारी गोलीबारी शुरू कर दी। ब्रेनेडियर पंजकु लाल को लक्ष्य बनाकर भी जा रही भारी गोलीबारी से भयभीत हुए बिना और अपने धाव की परवाह न करते हुए इन्होंने अपने पार्टी कमांडर के साथ उनका पीछा कर दो और आतंकवादियों को मार गिराया। गोलाबारी लगभग 20 मिनट तक चली, इस दौरान ब्रेनेड के छरे से हुए धाव से अत्यधिक खून बहते रहने के बावजूद ब्रेनेडियर पंजकु लाल ने पीछे हटने से इंकार कर दिया और तराशवातु अपने धाव की मरहमपट्टी कराने के लिए अपना प्राथमिक उपचार कराए जाने के बाद वे तब तक खोज कार्रवाई में शामिल रहे जब तक कि कंपनी कमांडर ने उन्हें वहां से हटाए जाने के आदेश न दे दिए। इस कार्रवाई से तीन राष्ट्र विरोधी तत्व मारे गए और एक यूनिवर्सल मशीनगन, तीन ए० के०-56 राइफलें, एक राइफल स्नैपर, दो पिस्तौल, एक रेडियो सेट और भारी मात्रा में गोला-बारूद बरामद हुआ।

इस प्रकार, ब्रेनेडियर पंजकु लाल ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की रचना भी परवाह किए बिना अतिरिक्त साहस कर्तव्यपरयणता तथा समर्पण भावना का परिचय दिया।

11. जे० सी०-412062 नायब सूबेदार
सुरजीत सिंह, (मरणोपरांत)
सेना मेडल,
9 पैरा कमांडो।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 अगस्त, 1994)

नायब सूबेदार सुरजीत सिंह, से० मे०, 9 पैरा कमांडो को जम्मू-कश्मीर के सामान्य क्षेत्र दशान वन में उग्रवादियों को ढूंढने और पकड़ने का कार्य सौंपा गया था। स्वतंत्रता विषय के दौरान उग्रवादियों द्वारा शांति भंग किए जाने की योजना थी।

श्रीलंका में संक्रिया "पवन" में सेना मेडल से अलंकृत सेनानी नायब सूबेदार सुरजीत सिंह ने अपनी सैन्य टुकड़ी को दो हिस्सों में विभाजित किया और अपनी आधी सैन्य टुकड़ी के लिए अधिक खतरनाक क्षेत्र चुना। 12 अगस्त, 1994 को प्रातः 5.00 बजे जूनियर कमीशन प्राप्त शूरवीर अफसर ने उन राष्ट्रविरोधी तत्वों पर अकस्मात हमला

कर दिया जो कि बेहद चालाकी से ऐसी जगह छिपे हुए थे जहां तक उन्हें ढूंढे बिना पहुंचना कठिन था। उधों ही उग्रवादियों पर हमला किया गया त्यों ही भयंकर गोलीबारी होने लगी। स्वर्गीय नायब सूबेदार सुरजीत सिंह, सेना मेडल के दल की गोलीबारी को उग्रवादियों ने जब कम कर दिया तो उन्होंने देखा कि इससे उग्रवादियों को भागने का अवसर मिल जाएगा। अतः जूनियर कमीशन प्राप्त बहादुर अफसर ने उनका पीछा करने का निर्णय लिया। अपने नेता के अनुकरणीय कृत्य से उत्प्रेरित सैन्य दल ने उग्रवादियों पर हमला कर दिया। इस अप्रत्याशित हमले से स्तब्ध उग्रवादी वहां से भाग खड़े हुए। कई गोलीबां लगने और घातक रूप से घायल होने के बावजूद नीचे गिरे जूनियर कमीशन प्राप्त अफसर ने अपनी ओर ध्यान देने से मना कर दिया और वे अपने साथियों को उग्रवादियों से जूझने के लिए प्रेरित करते रहे।

इस प्रकार, नायब सूबेदार सुरजीत सिंह, सेना मेडल, ने राष्ट्र विरोधी तत्वों के मनसूबों को विफल करने के लिए अत्यधिक साहस, विशिष्ट शूरवीरता, उत्कृष्ट नेतृत्व और निःस्वार्थ कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया और अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया है।

12. 258 2042 नायक वरसी वासुदेव राव, (मरणोपरांत)
6 मद्रास।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 13 अगस्त, 1994)

13 अगस्त, 1994 को आसूचना रिपोर्ट से मणिपुर के वाउत्राल जिला के उनावन गांव में कुछ उग्रवादियों के छिपे होने के बारे में पता चला। इन रिपोर्टों के आधार पर चारली कम्पनी के कमांडिंग अफसर ने उग्रवादियों को खोजने तथा मार डालने के लिए एक सैन्य दल भेज दिया। नायक वरसी वासुदेव राव अपनी टुकड़ी के सेक्शन कमांडर थे।

जैसे ही सैन्य दल उमाधल गांव के पास पहुंचकर इलाके की खोजबीन शुरू करने ही वाला था कि अचानक कार्काचंग खुनाओं कालेज पारसर से उस पर भारी और प्रभावी गोलाबारी शुरू कर दी गई। नायक वरसी वासुदेव राव ने तुरन्त अपनी टुकड़ी को तैनात कर दिया और अपने साथियों को कालेज पारसर में छिपे उग्रवादियों पर भारी और अचूक गोलीबारी करने का निदेश दिया। उन्होंने उग्रवादियों पर गोलीबारी करते हुए बगल से अपनी टुकड़ी का नेतृत्व किया। इस कार्रवाई के दौरान नायक वरसी वासुदेव राव की छाती में एक गोली आ लगी। यद्यपि उनके शरीर से बहुत अधिक रक्त बह रहा था, फिर भी उन्होंने अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए अदम्य साहस के साथ अपनी टुकड़ी का नेतृत्व किया। वे 14 अगस्त, 1994 को प्राण त्यागने तक अपनी टुकड़ी को सौंपे गए लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे

बढ़ने और गोलीबारी करते रहने के लिए अपने साथियों को प्रेरित करते रहे। उनके इस सर्वोच्च बलिदान के फलस्वरूप बाद में नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल आफ नागालैंड और यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट के संयुक्त दल के नौ उग्रवादियों को मार डाला गया और एक उग्रवादी को पकड़ लिया गया। मारे गए उन उग्रवादियों में नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल आफ नागालैंड का एरिया कमांडर और स्वयं-भू लेफ्टिनेंट कुम्पा एनाल शामिल था। उस क्षेत्र के खोज कार्य के फलस्वरूप वहां से बड़ी मात्रा में गोलाबारूद बरामद किया गया।

इस प्रकार, नाथक बरसी वासुदेव राव ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

13. कैप्टन जसबीर सिंह काबरवाल,
(आई० सी०-50950),
बिहार।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 03 सितम्बर, 1994)

03 सितम्बर, 1994 को कैप्टन जसबीर सिंह काबरवाल के नेतृत्व में एक घात लगाने वाले दल ने गुंडखोन गांव के पास कुछ उग्रवादियों को उस गांव से चुपचाप निकलकर नैदरखार्ड गांव की तरफ जाते देखा।

यह देखकर कैप्टन काबरवाल ने अपनी कुशाग्र बुद्धि तथा परिपक्वता का प्रदर्शन करते हुए अपने दल को दो भागों में विभाजित कर अपनी ए. के. राइफल की सतत तथा सटीक गोलीबारी से उग्रवादियों को उलझाए रखा। इसके परिणामस्वरूप तीन उग्रवादियों ने काफी निकट से अपनी ए. के. 56 राइफलों से गोलीबारी शुरू कर दी। कैप्टन जे० एस० काबरवाल ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना तीव्र कार्रवाई करके एक उग्रवादी, मुस्लिम जांबाज फोर्स के एक वुदात प्लाटून कमांडर को मार गिराया तथा एक ए. के. 56 राइफल, चार मेगजीने तथा 21 राउंड बरामद किए। धान के खेतों में छिपे दो उग्रवादियों ने कैप्टन जे० एस० काबरवाल की ओर तीन हथगोले फेंके परन्तु इस अफसर ने अद्वितीय प्रत्युत्पन्नमतित्व का प्रदर्शन करते हुए तथा चतुराई से समय पर कार्रवाई करके अपनी तथा अपने साथी सैनिकों की जान बचा ली। इन उग्रवादियों का पता लग जाने के बाद तथा उनकी भारी स्वचालित गोलीबारी से विचलित हुए बिना कैप्टन जे० एस० काबरवाल उग्रवादियों के निकट गए तथा अपनी ए. के. 47 राइफल से सटीक गोलीबारी करके दूसरे उग्रवादी, अल बर्क के वुदात एरिया कमांडर, को मार गिराया। तीसरे उग्रवादी जिसका गोलाबारूद लगभग समाप्त हो चुका था, ने अंतिम उपाय के रूप में कैप्टन जे० एस० काबरवाल पर गोलीबारी की। इस बहादुर अफसर ने तीव्र प्रतिश्रुति कर उग्रवादी से हाथपाई कर उस पर काबू पा लिया और उसका हथियार छीनकर उसे मार गिराया।

इस प्रकार कैप्टन जसबीर सिंह काबरवाल ने उग्रवादियों की गंभीर गोलीबारी का मुकाबला करने में अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए उत्कृष्ट वीरता और दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

14. 2478 603 सिपाही रनजीत सिंह, (मरणोपरांत)
पंजाब।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 03 सितम्बर, 1994)

3 सितम्बर, 1994 को 5 राष्ट्रीय राइफल की बटालियन ने जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले के हजरतबल मोहल्ला इलाके की घेराबंदी की। दोपहर लगभग साढ़े बारह बजे किसी माध्यम से सूचना मिली कि उस मोहल्ले के मकानों में ही कहीं तेहरिकुल मुजाहिदीन का जिला कमांडर बिलाल अहमद छिपा हुआ है। जब खोजीदल एक व्यक्ति वशीर अहमद के मकान में घुसा तो सिपाही रनजीत सिंह दूसरे सिपाही की आड़ लेकर सबसे पहले धर के अन्दर गया। खोजी-दल के बाकी सदस्य उनके पीछे-पीछे थे।

जब खोजी-दल ने किचन में पहुँचकर छिपने की संभावित जगह को देखते हुए आलमार्शियों को हटाना शुरू किया तो अचानक ही बिलाल अहमद ने अपनी ए. के. 56 राइफल से गोलीबारी शुरू कर दी। सिपाही रनजीत सिंह इस गोलीबारी के नजदीक थे, उन्होंने सबसे पहले उस छेद की ओर गोलीबारी की जहाँ से फायरिंग हो रही थी जिससे वह उग्रवादी घायल हो गया तथा अत्यधिक सार्हासिक कार्य करते हुए एक हाथ से आतंकवादी की राइफल को खींचने की कोशिश की। उग्रवादी ने गोलीबारी की बौछार जारी रखी। इस कार्रवाई में सिपाही रनजीत सिंह ने अपने हाथ और पेट पर गोलियाँ खाकर अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। सिपाही रनजीत सिंह ने गिरने समय अपनी जान की तनिक भी परवाह किए बिना न केवल दुर्दांत उग्रवादी को घायल किया अपितु गोलीबारी जारी रखकर अपने खोजी दल को निश्चित मौत से भी बचाया।

इस प्रकार, सिपाही रनजीत सिंह ने अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए असाधारण कर्तव्यपरायणता एवं अनुकरणीय साहस का परिचय देते हुए अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

15. 7431151 सिपाही ओम शिव शर्मा, (मरणोपरांत)
आसूचना कोर।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 05 सितम्बर, 1994)

जम्मू-कश्मीर के कुन्थल क्षेत्र में राष्ट्र विरोधी तत्वों के छिपने की खास सूचना मिलने पर एक घेराबंदी और खोजी कार्रवाई की गई। घेराबंदी का यह कार्य एक क्रिमेडियर के नेतृत्व में एक संयुक्त टुकड़ी ने 5 सितम्बर, 1994 को

प्रातः साढ़े पांच बजे शुरू किया। आसूचना के अन्य रैंक होने के नाते सिपाही ओम शिव शर्मा कमांडर के प्रति रक्षा दल में से ही एक थे और इसीलिए जिस समय पहले घर की खोजबीन की गई उस समय वे भी दल के साथ थे। मजबूत घेराबंदी से आश्चर्यचकित आतंकवादियों ने यह भांप लिया कि सुरक्षा बल वहां पहुंच गए हैं अतः उन्होंने कमांडर के सुरक्षा दल पर भयंकर गोलीबारी शुरू कर दी। गोलियों की बौछार में सिपाही ओम शिव शर्मा को जांच के ओड़ पर गोली लगी और वे गिर पड़े। अदम्य साहस एवं दृढ़ निश्चय का परिचय देते हुए तथा अपनी चोट की तनिक भी धिक्ता न करते हुए सिपाही ओम शिव शर्मा ने अपने कमांडर का जीवन गंभीर खतरे में पड़ा देखकर उस राष्ट्र विरोधी तत्व पर गोलीबारी की जो घर के बाहर से चारों ओर गोलियां बरसा रहा था। सिपाही ओम शिव शर्मा ने प्रभावी गोलीबारी कर उस राष्ट्र विरोधी तत्व को मार गिराया। यह जानने के बावजूद कि उनके जीवन का अंत निकट ही है वे खोजी-संक्रियाओं में अपने साथियों को प्रोत्साहित करते रहे तथा सभी के लिए प्रेरणा के स्रोत बने। गंभीर चोटों के कारण बाद में वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार सिपाही ओम शिव शर्मा ने अदम्य साहस तथा आत्मबलिदान की भावना का परिचय दिया।

16. मेजर राजेश कुमार शर्मा (आई० सी०-48241),
26 पंजाब

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 06 सितम्बर 1994)

5 सितम्बर, 1994 को शाम के लगभग साढ़े छह बजे बुना बटुर गांव में एक उग्रवादी के घर पर छापा मारा गया। छिपे हुए उग्रवादी ने छापा बल पर हथगोले फेंके और भारी गोलीबारी की। इस भीषण मुठभेड़ में मेजर राजेश कुमार शर्मा ने मकान की छत पर चढ़कर धावा बोल दिया और हिजबुल मुजाहिदीन के उग्रवादी को मार गिराया। एक अन्य घटना में 6 सितम्बर, 1994 को जब हमारे जवान दोरू गांव में गांव वालों को संबोधित कर रहे थे तो घान के खेत में छिपे तीन उग्रवादियों ने उन पर गोलियां चलाई और गांव में भाग गये। मेजर शर्मा के नेतृत्व में जवानों के एक दल ने 500 मीटर तक उनका पीछा किया। उग्रवादी उन पर गोलीबारी करते हुए पास के एक मकान में घुस गये। मेजर शर्मा की आत्मसमर्पण की अपील का जवाब उन्होंने श्रद्धाघुन्ध गोलीबारी से दिया जो कि लगभग 45 मिनट तक चली। तब इस अफसर ने एक सिपाही को साथ लेकर स्वयं ही मकान पर धावा बोलने का निर्णय लिया। मेजर शर्मा एक खिड़की के रास्ते मकान में घुस गये और हिजबुल मुजाहिदीन के खूंखार प्लाटून कमांडर को मार गिराया व एक अन्य उग्रवादी को घायल कर दिया। इसी दौरान एक तीसरे उग्रवादी ने इस अफसर पर गोली से प्रहार किया और घायल उग्रवादी के साथ निकट वाले मकान में कूद गया। मेजर

राजेश कुमार शर्मा अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करने हुए उस मकान की छत पर कूद गये और उनका पीछा करने लगे। इस गम्भीर मुठभेड़ में इस अफसर ने गोलियों की बौछार की परवाह न करते हुए दोनों उग्रवादियों पर हमला करके उन्हें मार गिराया।

इस प्रकार मेजर राजेश कुमार शर्मा ने वीरता, उत्कृष्ट नेतृत्व के गुणों और विशिष्ट व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया।

17. स्क्वाड्रन लीडर टोनी पॉल नन्दा (17697-एन) उड़ान
(पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 सितम्बर, 1994)

स्क्वाड्रन लीडर टोनी पॉल नन्दा वायुसेना के चेतक/चीता हेलिकाप्टर उड़ाने के लिए जनवरी, 1994 से तैनात हैं।

15 सितम्बर, 1994 को इन्होंने जम्मू कश्मीर में रियासी जिले के गोटा गांव के चेतक हेलिकाप्टर में घायल व्यक्तियों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने का कार्य सौंपा गया था। यह जानते हुए कि हताहतों को राष्ट्रविरोधी तत्वों द्वारा चलाई गई गोलियां लगी थी, इन्होंने समुद्र तल से 6000 फुट की ऊंचाई पर पहुंचने और वहां हेलिकाप्टर उतारने में समुचित एहतियात बरती।

इन्होंने दो घायल व्यक्तियों को तत्परता से हेलिकाप्टर में चढ़ाया और पायलट की सीट पर बैठ गये। हेलिकाप्टर के शीटरों के चालू होते ही उस पर पहाड़ी से की गई गोलीबारी से वह क्षतिग्रस्त हो गया। एक गोली स्क्वाड्रन लीडर नन्दा के सिर पर लगकर निकल गई। लहलुहान और किकसंध्य विमूढ़ होने पर भी इन्होंने अपना होश संभाल कर हेलिकाप्टर को उड़ाने का निर्णय लिया।

इन्होंने गोलियों की बौछार के बीच उड़ान भरकर भाग निकलने का सबसे उपयुक्त रास्ता चुना। गम्भीर खतरे के समय भी इनके लिये हेलिकाप्टर और यात्रियों की सुरक्षा सर्वोपरि थी। स्वयं घायल होने के बावजूद निकटतम हवाई पट्टी पर उतरने के वजाय ये हेलिकाप्टर को उड़ाकर जम्मू ले गए ताकि घायल व्यक्तियों को समय पर सिविल अस्पताल में पहुंचाया जा सके। स्क्वाड्रन लीडर टी० पी० नन्दा ने ऐसी खतरनाक परिस्थितियों में भी वायुसेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक कुशलता, बुद्धिमत्ता और असाधारण साहस का परिचय दिया।

इस प्रकार स्क्वाड्रन लीडर टोनी पॉल नन्दा ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए साहस, दृढ़संकल्प तथा असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

18. जे० सी०-183532 नायब सूबेदार तरसेम सिंह, 19 जम्मू कश्मीर राइफलस (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 सितम्बर, 1994)

जम्मू कश्मीर के डोडा जिले के एक गांव में 23 सितम्बर, 1994 को नायब सूबेदार तरसेम सिंह के नेतृत्व में घेराबन्दी और खोज कार्य शुरू किये गये थे। सुबह 7 बजे उनके खोजी दल पर एक मकान से गोलीबारी की गई। नायब सूबेदार तरसेम सिंह ने तत्परता से उस मकान के नजदीक जाकर घेराबन्दी कर दी। उग्रवादियों पर काबू पाने के लिये उन्होंने गोलीबारी कर रहे अपने साथियों के बीच समन्वय बनाये रखा और एक राकेट दागकर उस मकान का कुछ हिस्सा ध्वस्त कर दिया।

दोपहर 12.45 बजे खोजी दल पुनः एक अन्य मकान से की जा रही गोलीबारी की जपेट में आ गया। सैन्य दल ने तुरन्त जवाबी कार्रवाई करते हुए गोलियां चलाई। मकान के भीतर छिपे उग्रवादियों पर लघु शस्त्रों से की गई गोलीबारी का कोई असर नहीं पड़ा। उस जूनियर कमीशन प्राप्त अफसर ने उग्रवादियों की प्रभावी गोलीबारी को निष्प्रभावी करने के लिये जवाबी हमला किया और अपने साथियों को खतरे से बचाने के लिये उन्होंने स्वयं राकेट लांचर लेकर एक उपयुक्त स्थान पर चले गये। जब वे राकेट दागने के लिये निशाना साध ही रहे थे कि उग्रवादियों की एक गोली उनके सिर में आ लगी। घातक चोट लगने के बावजूद उन्होंने राकेट दाग दिया जिससे मकान आंशिक रूप से ध्वस्त हो गया। उनके अदम्य साहस, सूझ-बूझ और दृढ़ इच्छा शक्ति के परिणामस्वरूप उग्रवादी मारा गया और उनके साथियों के अमूल्य जीवन की रक्षा हुई।

इस प्रकार, नायब सूबेदार तरसेम सिंह ने बहादुरी से लड़ते हुए एवं अपने कर्तव्य का पालन करते हुए वीरगति प्राप्त की।

19. 4555557 सिपाही सतपाल सिंह, (मरणोपरान्त) 9 महार

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 नवम्बर, 1994)

जम्मू कश्मीर के डोडा जिले के डूडा गांव में 10 सशस्त्र आतंकवादियों के होने की सूचना मिलने पर आतंकवादियों के उस गुट के साथ मुठभेड़ करने के लिये एक बटालियन स्तरीय संक्रिया की योजना बनाई गई।

सिपाही सतपाल सिंह को एक दस्ते के स्काउट के रूप में तैनात किया गया। 11 नवम्बर, 1994 को प्रातः छह बजे जब वह दस्ता उड़नाल की ओर जा रहा था तो उसे अचानक दो तीन सिविलियन दिखाई दिये। जब सिविलियनों को ललकारा गया तो उन्होंने अपने कमल उतार फेंके तथा प्रभावी गोलीबारी शुरू कर दी। उसी समय लकड़ी की चारदीवारी से लगे स्थान पर छिपे हुए उग्रवादियों ने झाड़ू लेकर गोलीबारी शुरू कर दी। उग्रवादियों की गोलीबारी के सामने आ जाने के बावजूद सिपाही सतपाल सिंह ने उन्हें उसकाये रखा।

दोनों तरफ से हुई गोलीबारी के दौरान सिपाही सतपाल सिंह को प्राणघातक चोटें आईं इस के बावजूद वे आतंकवादियों को हताहत करते रहे और वीरगति प्राप्त होने तक उनका मुकाबला करते रहे।

इस प्रकार सिपाही सतपाल सिंह ने प्रतिकूल परिस्थितियों में अदम्य साहस का परिचय दिया और अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया।

20. 411664 राइफलमैन, रामाशंकर, असम राइफलस (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 दिसम्बर, 1994)

पिछली शाम को ही लम्बी गश्त ड्यूटी से वापस आने के बावजूद 4 असम राइफलस के राइफलमैन रामाशंकर स्वेच्छा से गश्ती दल "सूरज" के साथ जाने के लिये तैयार हो गये। इस गश्ती दल को नेशनल सोशलिस्ट कार्गिल आफ नागालैंड के भूमिगत उग्रवादियों का सामना करने और उन्हें जान से मारने/पकड़ने का कार्य सौंपा गया था।

14 दिसम्बर, 1994 को लगभग 1010 बजे मणिपुर की ताना लोक नदी के सामान्य क्षेत्र में इस गश्ती दल की एन० एस० सी० एन० (एस०) के उग्रवादियों से मुठभेड़ हो गई। आगे चल रहे जवानों की टुकड़ी भूमिगत उग्रवादियों द्वारा कारगर स्थान से की जा रही भारी और अचूक गोलीबारी की जपेट में आ गई। राइफलमैन रामाशंकर ने तुरन्त अपने कमांडर के साथ उन पर आक्रमण कर दिया। इस हमले के दौरान उसका कमांडर गम्भीर रूप से घायल हो गया। यह देखकर राइफलमैन रामाशंकर ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह किये बिना शत्रुओं पर धावा बोल कर एक को मार गिराया। इस प्रकार उन्होंने भूमिगत उग्रवादियों को अपने साथियों के शस्त्र, गोलाबारूद और उपस्कर छीनने से रोका। इस कार्रवाई के दौरान उनकी छाती में हल्की मशीन गन की गोली लगने से वे गम्भीर रूप से घायल हो गये। घायल होने के बावजूद वे अन्तिम सांस लेने तक अपने घुटनों और पेट के दल आगे बढ़ते हुए अपने शस्त्र से फायर करते रहे। उनके अदम्य साहस से विवश हो कर उग्रवादी बबराहट में अपना ठिकाना छोड़कर भाग खड़े हुए और अपने पीछे भारी मात्रा में शस्त्र, गोलाबारूद, उपस्कर, आपातिजनक दस्तावेज तथा अपने दो साथियों के शव छोड़ गये।

इस प्रकार राइफलमैन रामाशंकर ने भूमिगत विद्रोहियों का मुकाबला करने में उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन किया और अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया।

21. जी० एस-160418 एफ यांत्रिक उपस्कर चालक, कुड्डा राम

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 24 फरवरी, 1995)

श्री कुड्डा राम को जम्मू कश्मीर के विद्रोह प्रभावित डोडा जिले में गल्हर-संतारी मार्ग पर अज्ञान काटने के कार्य पर लगाया गया था।

गल्हार-संसारी मार्ग के 46 से 54 कि० मी० वाले क्षेत्र पर निरन्तर गिलाखण्डों और हिमखण्डों के गिरते रहने से यह क्षेत्र बहुत ही जोखिम पूर्ण है इसलिये यहां पर कार्य करना दुष्कर होता है। इसके अलावा, तेज हवा और भीत लहर के चलते रहने से डोजर चलाना भी दुष्कर हो जाता है। इसके बावजूद श्री कुड्डा राम स्वेच्छा से इस क्षेत्र में चट्टान काटने के लिये तैयार हो गये।

24 फरवरी, 1995 को लगभग 11.00 बजे चट्टान काटते समय श्री कुड्डा राम अपने डोजर सहित एक हिमखण्ड के नीचे दबकर धायल हो गये। भारी हिमखण्ड के नीचे से बाहर निकलते ही एक दूसरा हिमखण्ड गड़गड़ाता हुआ इनसे कुछ ही फुट की दूरी पर आ गिरा। तथापि, श्री कुड्डा राम ने धैर्य रख अद्भुत साहस का परिचय दिया। यद्यपि सड़क कार्य दल के प्रभारी ने इन्हें आराम करने और चिकित्सा सहायता लेने की सलाह दी तथापि धायल कुड्डा राम तब तक डोजर चलाते रहे जब तक कि ये उसे सुरक्षित उचित दूरी तक न ले गये। न्यूनतम प्राथमिक चिकित्सा लेने के बाद ये असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए शून्य से भी कम तापमान में निरन्तर कार्य करते रहे। इनके साहस, बल और उत्साह से ही विषम परिस्थितियों में भी इस क्षेत्र में चट्टान काटने का कार्य समय पर पूरा कर लिया गया। इन्होंने एक बेनजीर पेश कर अपने साथियों में नया उत्साह पैदा किया।

इस प्रकार श्री कुड्डा राम ने अपनी सुरक्षा की रंचमाल परवाह न किये बिना अत्यन्त प्रतिकूल मौसम में अदम्य साहस, शौर्य, उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता तथा धैर्य का परिचय दिया।

22. 13613971 लांस हवलदार राजबीर, पैरा

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 अप्रैल, 1995)

पैराशूट रेजिमेंट के लांस हवलदार राजबीर उस छापामार दल में शामिल थे जिसे नागालैंड के तिहोडो गांव में 11/12 अप्रैल, 1995 को रात को नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंड (इसके मुख्यालय) ग्रुप के स्वयं-भू उपग्रह मंत्री क्यू दुक्कू और चार बटालियन कमांडरों में से एक भूतपूर्व पुलिस उप महानिरीक्षक केखेटो सेमा को पकड़ने का कार्य सौंपा गया था।

12 अप्रैल, 1995 को सुबह लगभग 6 बजकर 10 मिनट पर स्वयं-भू मेजर केखेटो सेमा को सविश्व मकान की ओर जाते हुए देखा गया था। भूमिगत अफसर को पकड़ने के लिये लांस हवलदार राजबीर, मेजर बसील मैस्सी के साथ मकान में घुस गये। स्वयं-भू मेजर केखेटो सेमा ने जैसे ही उन्हें अपनी ओर आते हुए देखा वह अपने अंगरक्षक के साथ एक जिप्सी में बैठकर भाग गया। मेजर बसील मैस्सी ने तत्काल गांव से एक अन्य जिप्सी की व्यवस्था की और लांस

हवलदार राजबीर को साथ लेकर भागते हुए उस उग्रवादी का पीछा किया। खेतों से होते हुए लगभग चार किलोमीटर तक जिप्सी का पीछा करने के पश्चात् लांस हवलदार राजबीर ने अपनी चलती हुई गाड़ी से गोलीबारी करके भागते हुए उग्रवादी की गाड़ी का एक टायर पत्थर कर दिया। लांस हवलदार राजबीर ने स्वयं-भू मेजर केखेटो सेमा को मेजर बसील मैस्सी जो उसी की तरफ बढ़ रहे थे की ओर एक हथगोला फेंकने हुए देखा। उन्होंने तुरन्त मेजर मैस्सी को हक जाने के लिये कहा क्योंकि उन्होंने सोचा कि शायद मेजर मैस्सी ने उन पर फेंके गये हथगोले को नहीं देखा है। साथ ही, लांस हवलदार राजबीर हथगोले के धमाके से वे दोनों एक तरफ जा गिरे। यद्यपि, लांस हवलदार राजबीर की बायीं कनपटी, पेट और दोनों टांगों में काफी थोड़ लगने से उनके शरीर से अत्यधिक रक्त बह रहा था फिर भी उन्होंने भाग कर उग्रवादी का लगभग 100 गज की दूरी तक पीछा किया और उसका काम तमाम कर दिया। बाद में, पहचान करने पर वह स्वयं-भू मेजर केखेटो का अंगरक्षक निकला।

इस प्रकार, हवलदार राजबीर ने वृद्ध शक्ति, समर्पण भावना, उत्कृष्ट साहस तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

गिरीश प्रधान,
निदेशक

सं० 183-प्रेज/95—राष्ट्रपति, निम्नलिखित अफसरों/कामियों को उनके साहसपूर्ण कार्यों के लिए उन्हें "सेना मेडल/धार्मी मेडल" प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. कर्नल तेजपाल सिंह माहिल (मरणोपरांत)
(आई० सी०-24374)
मद्रास।
2. कर्नल मनोहर सिंह चौहान
(आई० सी०-32779)
बीर चक्र
गोरखा राइफल्स।
3. लेफ्टिनेंट कर्नल मणि मुकुट मिश्रा
(आई० सी०-31811)
बिहार।
4. लेफ्टिनेंट कर्नल कमल कुमार शर्मा
(आई० सी०-34205) शौर्य चक्र
गोरखा राइफल्स।
5. लेफ्टिनेंट कर्नल आलोक मेहता
(आई० सी०-24796)
घाटिलरी।

- | | | |
|---|---|-------------|
| 6. मेजर मोहन किसकके बीड़ू (आई० सी०-34609) मद्रास । | 20. कैप्टन घनवन्त शर्मा (आई० सी०-50779) आटिलरी । | (मरणोपरांत) |
| 7. मेजर दीपक कपहाडिया (आई० सी०-42449) पंजाब । | 21. कैप्टन अजीत सिंह (आर० सी०-554) वीर चक्र आटिलरी । | (मरणोपरांत) |
| 8. मेजर अभय कृष्ण (आई० सी०-38679) राजपूताना राइफल्स । | 22. कैप्टन संजीव मेधी (एम० एस०-12543) सेना चिकित्सा कोर । | |
| 9. मेजर कवल जीत सिंह धालीवाल (आई० सी०-40867) वायु रक्षा तोपखाना । | 23. कैप्टन रवी दत्त भट्ट (आर० सी०-534) कुमाऊं । | |
| 10. मेजर चन्द्र मोहन शुक्ला (आई० सी०-39386) आटिलरी । | 24. कैप्टन राजेश गोपालाकृष्णन (आई० सी०-51220) मराठा लाइट इंफैंट्री । | |
| 11. मेजर अभया बेटेकर (आई० सी०-45894) सिख लाइट इंफैंट्री । | 25. कैप्टन जनमेज सिंह (आर० सी०-564) डोगरा । | |
| 12. मेजर अपूर्वा वर्मा (आई० सी०-39564) सेना विमानन । | 26. कैप्टन यशपाल सिंह अहलावत (आई० सी०-50080) मद्रास । | |
| 13. मेजर महेन्द्र जोगदांद (आई० सी०-44759) जम्मू और कश्मीर राइफल्स । | 27. कैप्टन सुब्रत मिश्रा (आई० सी०-50919) कवचित कोर । | |
| 14. मेजर साहिब सिंह संधू (आई० सी०-43443) आटिलरी । | 28. कैप्टन योग राज पाठक (आई० सी०-48385) राष्ट्रीय राइफल्स । | |
| 15. मेजर सुनिल कुमार पाठक (आई० सी०-41305) आटिलरी । | 29. लेफ्टिनेंट हरबंस दत्त धकियाल (आर० सी०-756) जम्मू और कश्मीर राइफल्स । | |
| 16. मेजर पी० नागेश राव (आई० सी०-40680) पैरा । | 30. सेकंड लेफ्टिनेंट नीरज गुप्ता (आई० सी०-51210) जम्मू और कश्मीर लाइट इंफैंट्री । | |
| 17. कैप्टन सिद्धार्थ चटर्जी- (आई० सी०-42422) पैराशूट रेजिमेंट । | 31. सेकंड लेफ्टिनेंट उत्तम दीक्षित (आई० सी०-51487) राजपूताना राइफल्स । | |
| 18. कैप्टन बलराज कक्कर (आई० सी०-48547) पैरा । | 32. सेकंड लेफ्टिनेंट मनोज मैथ्यू (आई० सी०-51773) सिख । | |
| 19. कैप्टन अलोक झा (आई० सी०-48537) पैरा । | 33. सेकंड लेफ्टिनेंट सुब्रामनियम वेलू पांडियन (आई० सी०-52068) महार । | |

34. मेकंड लेफ्टिनेंट सुनील शेड्टी
(एस० एस०-35834),
डोंगरा रेजिमेंट ।
35. जे० सी०-209161, सूबदार विजयन पलेरी,
वैद्युत एवं यांत्रिकी इंजीनियर्स । (मरणोपरांत)
36. जे० सी०-162131 सूबेदार पुंडलीक काचुत्तिहालकर,
मराठा लाइट इंफैंट्री ।
37. जे० सी०-212548, नायब सूबेदार
माने कमलाकर राम,
मराठा लाइट इंफैंट्री ।
38. जे० सी०-438184, नायब सूबेदार के० उम्रीकृष्णन्त,
मद्रास ।
39. 2777119, (मरणोपरांत)
हवलदार शेडगे लक्ष्मण सिताराम,
मराठा लाइट इंफैंट्री ।
40. 13748099, हवलदार (मरणोपरांत)
भशोक थापा,
आसुचना कोर ।
41. 13738264, हवलदार लेख राज,
जम्मू और कश्मीर राइफल्स ।
42. 2668821, हवलदार आशा राम,
ग्रैनेडियर्स ।
43. 14454662, हवलदार जगदीश चन्द,
ग्रादियरी ।
44. 13739843, हवलदार दत्त बहादुर खण्ड,
जम्मू और कश्मीर राइफल्स ।
45. 2300871, हवलदार राम बहादुर भत्री,
असम राइफल्स (मरणोपरांत) ।
46. 2669327 हवलदार जगदीश प्रसाद सीना,
ग्रैनेडियर्स ।
47. 4046777, हवलदार कंवर सिंह
गढ़वाल राइफल्स ।
48. 13613958, लांस हवलदार करण सिंह,
ग्रैनेडियर्स ।
49. 103570, नायक नागिना राम,
10 असम राइफल्स ।
50. 13745163, नायक रविन्द्र सिंह,
जम्मू और कश्मीर राइफल्स ।
51. 4457778, नायक बलदेव सिंह,
सिख लाइट इंफैंट्री (मरणोपरांत) ।
52. 4173600, नायक राम कुमार,
कुमाऊ ।
53. 3978326; नायक नरिन्द्र कुमार,
डोंगरा ।
54. 1375180, नायक पोक्कामाया थेवर श्रीमालारामन,
इंजीनियर्स ।
55. 2470907, नायक गुरसाहिब सिंह,
पंजाब ।
56. 4060252, नायक गोकुल सिंह,
गढ़वाल राइफल्स ।
57. 4463906, नायक हरी चन्द,
सिख लाइट इंफैंट्री ।
58. 4174479, नायक सल्लू सिंह-
15 कुमाऊ ।
59. 4062043 लांस नायक मगन सिंह,
गढ़वाल राइफल्स (मरणोपरांत) ।
60. 2772955 लांस नायक शेटे प्रदीप कुमार उमाकांत
मराठा लाइट इंफैंट्री (मरणोपरांत) ।
61. 1384583, लांस नायक चाम्बन्डा माच्येया सोमैया,
इंजीनियर्स (मरणोपरांत) ।
62. 19763, लांस नायक खुशाल सिंह महता,
असम राइफल्स (मरणोपरांत) ।
63. 14466114, लांस नायक शशीधर फुक्कन,
ग्रादियरी ।
64. 9087651, लांस नायक नरेश कुमार,
जम्मू और कश्मीर लाइट इंफैंट्री ।
65. 2595666, सिपाही फ्रिस्टोफर ए०,
मद्रास (मरणोपरांत) ।
66. 2583964, सिपाही मदन गुरुमय्या,
मद्रास ।
67. 2479098 सिपाही बलबन्त सिंह,
पंजाब ।
68. 2986035 सिपाही जहोरी मल,
राजपूत ।
69. 4467185, सिपाही हरी सिंह,
सिख लाइट इंफैंट्री ।
70. 9924288, सिपाही छिरिंग संगरूप,
लद्दाख रथाउट्स ।
71. 4270941, सिपाही निकुम हिमन रूप चन्द,
बिहार ।
72. 4559191, सिपाही प्रबाल चन्द्र दास,
महार ।
73. 2479214, सिपाही असबन्त सिंह
पंजाब (मरणोपरांत) ।

74. 4470402, सिपाही हरजीत सिंह, सिख
लाइट इंफैन्ट्री (मरणोपरांत)
75. 4562737, सिपाही देवी सिंह,
सहार (मरणोपरांत)।
76. 411732, राइफलमैन विनेश प्रसाद,
असम राइफल (मरणोपरांत)।
77. 4070530, राइफलमैन विगम्वर सिंह,
गढ़वाल राइफल (मरणोपरांत)।
78. 2301409, राइफलमैन ललित कुमार सांगमा,
असम राइफल।
79. 411307, राइफलमैन मनोज कुमार बैठा,
असम राइफल।
80. 411564, राइफलमैन भीम बहादुर बापा
असम राइफल (मरणोपरांत)।
81. 13618019 पैराट्रुपर रमन कुमार बर्मा,
पैरा।
82. 2683235, ग्रेनेडियर मोहम्मद गफ्फार,
ग्रेनेडियर्स।
83. 13689669, गार्डसमैन सुधीर कुमार गंजू,
गार्ड्स।

गिरीश प्रधान,
निदेशक

संख्या 184-प्रेज/95—राष्ट्रपति साजेंट जतिन्ध नाथ
प्रधान (695654 एन) को उनके साहसपूर्ण कार्यों के लिए
“वायुसेना मंडल/एयर फोर्स मेडल” प्रदान किए जाने का सहर्ष
अनुमोदन करते हैं।

गिरीश प्रधान,
निदेशक

दिनांक 19 सितम्बर, 1995

सं० 168-प्रेज/95;—राष्ट्रपति, 27 सितम्बर, 1986
के भारत के राजपत्र के भाग-I, खण्ड 1 में प्रकाशित
राष्ट्रपति सचिवालय की 12 सितम्बर, 1986 की अधिसूचना
संख्या 72-प्रेज/86 के उच्च तृणता मेडल से संबंधित
अध्यादेश में निम्नलिखित वाक्य जोड़ने का निदेश देते
हैं :—

2. मौजूदा खण्ड के छठे उप-खण्ड (ख) के बाद निम्नलिखित
उप-खण्ड (ग) जोड़ा जाए :—

(ग) “सभी कामिक्र अंतर्की मृत्यु हो गई या जिन्हें
सी चोटें आई हों जिनके कारण उन्हें समय से पहले,

हकने की समय-सीमा को ध्यान में न रखते हुए, वहां से
ले जाया गया हो। यह अधिसूचना जारी किए जाने की
तारीख से लागू होगी।

गिरीश प्रधान,
निदेशक

सं० 185-प्रेज/95—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तिओं
को शौर्य के लिए राष्ट्रपति का होमगार्ड्स तथा नागरिक
सुरक्षा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

श्री राधेश्याम (मरणोपरांत)
होम गार्ड स्वयं सेवक सं० 339,
राजस्थान।

सेवाओं का विवरण जिसके लिए पदक प्रदान किया
गया।

7 नवम्बर, 1994 की दुर्भाग्यपूर्ण रात्रि को स्वयं सेवक
होम गार्ड श्री राधेश्याम जाँच चौकी करवाला बाता सधूल-
शहर, राजस्थान में कानून व व्यवस्था झूठी पर तैनात थे।
लगभग 19.30 बजे बाता सधूलशहर ने अपनी सभी
चौकियों को हनुमानगढ़ में तीन अज्ञात बदमाशों द्वारा बन्दूक
दिखाकर एक मोटर साइकिल छीनने की घटना जानकारी वायरलेस
पर दी। चैक पोस्ट से उसी दिन लगभग 19.45 बजे एक मोटर
साइकिल जिस पर ड्राइवर तथा दो अन्य व्यक्ति सवार थे,
का पता चला। उनको सलकारने पर मोटर साइकिल पर
सवार व्यक्ति मोटर साइकिल को छोड़कर अंधेरे का लाभ
उठाकर निकटवर्ती खेतों की ओर भाग गए। चैक पोस्ट के
गाड़ों ने उन व्यक्तियों का पीछा किया। श्री राधेश्याम ने
उनमें से एक को पकड़ लिया जबकि अन्य गाड़ों ने अन्य दो
व्यक्तियों का पीछा किया। श्री राधेश्याम द्वारा पकड़े गए
बदमाश ने उसकी गिरफ्त से निकलने का बहुत प्रयास किया
लेकिन वह असफल रहा। भागने का कोई दूसरा रास्ता
न पाकर, उस बदमाश ने मजदीक से ही श्री राधेश्याम पर
अपनी पिस्तौल से गोली चला दी। जबकि श्री राधेश्याम
पिस्तौल की गोली से घायल हो गए थे तो भी उन्होंने अपनी
गिरफ्त डीली न होने दी और उस बदमाश को पकड़े रखा।
इससे अन्य बदमाशों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार कर
लिया गया।

इस मुठभेड़ में श्री राधेश्याम, होम गार्ड स्वयं सेवक ने
अदम्य वीरता साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का
परिचय दिया।

यह पदक राष्ट्रपति का होम गार्ड्स तथा नागरिक सुरक्षा
पदक नियमावली के नियम 3(1) के अंतर्गत वीरता के लिए
दिया जा रहा है तथा नियम 5(क) के अंतर्गत विशेष

स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 7 नवम्बर, 1994 से दिया जाएगा।

गिरीश प्रधान
निदेशक

सं० 186-प्रेज/95—राष्ट्रपति, निम्नलिखित अधिकारियों को शौर्य के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

श्री एम० एस० दार,
निवेशक,
जम्मू व कश्मीर अग्निशमन सेवा,
जम्मू व कश्मीर।

श्री जी० एन० सोफी,
सहायक निवेशक,
जम्मू व कश्मीर अग्निशमन सेवा,
जम्मू व कश्मीर।

श्री एल० ए० खान,
सहायक निवेशक,
जम्मू व कश्मीर अग्निशमन सेवा,
जम्मू व कश्मीर।

श्री एम० एच० लोन,
चालक,
जम्मू व कश्मीर अग्निशमन सेवा,
जम्मू व कश्मीर।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया :—

8 तथा 9 जुलाई, 1995 के बीच की रात को जम्मू व कश्मीर में चरार-ए-शरीफ में विनाशकारी आग लगी थी। 00.05 बजे आग लगने की आपातकालीन सूचना प्राप्त होने पर अग्निशमन सेवा के निवेशक श्री एम० एस० दार अपने सहायक निवेशकों के साथ अग्निशमन के सभी साधन भेजने के बाद घटनास्थल की ओर चल पड़े। लगभग 02.30 बजे अग्निशमन दल को आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच हो रही गोलीबारी के कारण अस्पताल के चौराहे पर रुकना पड़ा। जिससे घटनास्थल पर पहुंचना असम्भव हो गया था श्री एम० एस० दार तथा अग्निशमिकों के उनके दल को घटनास्थल पर पहुंचने के लिए जमीन पर रेंगते हुए जाना पड़ा जबकि गोलीबारी के कारण कुछ अग्निशमन उपकरण भी गोली का निशाना बने थे। इन अधिकारियों ने स्थिति तथा आसपास पर जायजा लिया और देखा कि इबादतगाह तथा निकाह मस्जिद का लकड़ी का ढांचा आग की चपेट में है। जम्मू व कश्मीर अग्निशमन सेवा के निवेशक श्री दार ने तब स्थिति का आपरेशनल निबंधन पूरी तरह अपने हाथ में लिया और अभियान के

लिए सुनियोजित योजना बनाई। सहायक निदेशक श्री सोफी को इबादतगाह के उत्तरी भाग की ओर से चालू होज पाइप बिछाने की जिम्मेवारी दी गई और श्री एल० ए० खान को लगातार पानी की सप्लाई बनाए रखने का जिम्मा दिया गया। चालक श्री लोन गोलीबारी के बीच अग्निशमन उपकरणों को बड़ी निर्भीकता से घटनास्थल पर ले गए और ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद पोटेंबल पम्पों को प्रभावी ढंग से चालू कर दिया जो 80 घंटों तक चलते रहे। श्री दार और उनके उत्साही एवं समर्पित अग्निशमिकों के दल के अदम्य प्रयासों से ऐसी युद्ध जैसी स्थिति में अपने प्राणों की परवाह न करते हुए 36 घंटों से भी अधिक समय तक जूझ कर हर संभव सीमा तक इबादतगाह तथा आसपास के मकानों को बचा दिया।

इस घटना में सर्वश्री एम० एस० दार, निवेशक, जी० एन० सोफी, सहायक निदेशक, एल० ए० खान, सहायक निदेशक, और एम० एच० लोन, चालक ने उत्कृष्ट वीरता, साहस और उम्बकोटि की कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

ये पदक राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक नियमावली के नियम 3(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप विशेष भत्ता भी दिनांक 8 मई, 1995 से दिया जाएगा।

गिरीश प्रधान
निदेशक

सं० 187-प्रेज/95—राष्ट्रपति, निम्नलिखित अधिकारियों को उनके शौर्य के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

श्री आर० एस० सीढी,
सहायक निदेशक,
जम्मू व कश्मीर अग्निशमन सेवा,
जम्मू और कश्मीर।

श्री बी० ए० अलाइ,
सब आफिसर,
जम्मू व कश्मीर अग्निशमन सेवा,
जम्मू व कश्मीर।

श्री जी० एम० बाबू,
लीडिंग फायरमैन,
जम्मू व कश्मीर अग्निशमन सेवा,
जम्मू और कश्मीर।

श्री ए० ए० भट्ट,
फायरमैन,
जम्मू व कश्मीर अग्निशमन सेवा,
जम्मू और कश्मीर।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया :—

8 और 9 मई, 1995 के बीच की रात को जब सुरक्षा बलों और उग्रवादियों के बीच गोलीबारी हो रही थी तब जम्मू व कश्मीर में चरार-ए-शरीफ, कस्बे में विनाशकारी आग लग जाने की सूचना प्राप्त हुई। निदेशक अग्निशमन सेवा के नेतृत्व में अग्निशमन दल तुरन्त घटना-स्थल की ओर रवाना हुआ लेकिन प्रतिकूल आपरेशनल स्थिति की वजह से उनके कस्बे के अस्पताल चौराहे पर रुकना पड़ गया क्योंकि अतबरत गोली-बारी के कारण घटनास्थल पर पहुँचना असम्भव हो गया था। मुश्किलों और व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करने हुए सब आफिसर श्री बी. ए. अलाह, लीडिंग फायरमैन, जी० एम० बाडू और फायरमैन ए० ए० भट्ट के साथ आग को, जिसने उस स्थल और उसके साथ लगी लकड़ी की खानखाह मस्जिद को अपनी चपेट में ले लिया था, कारगर रूप से नियंत्रण में करने के लिए घटनास्थल पर पहुँचने वाले सबसे पहले व्यक्ति थे। ऐसी विषम परिस्थिति में जम्मू व कश्मीर अग्निशमन सेवा का आग बुझाने वाला यह दल पूजा स्थल और उससे जुड़े ढाँचों को बचाने के लिए लगातार 36 घंटे आग से जूझता रहा। श्री आर० एस० सोही, सहायक निदेशक ने उस समय अग्निशमन नियंत्रण कक्ष का कार्य भार संभाला और आपरेशन की सफलता के लिए अग्निशमन कार्रवाइयों का प्रभावपूर्ण ढंग से समन्वय किया।

इस घटना में सर्वश्री आर० एम० सोही, सहायक निदेशक, बी० ए० अलाह, सब-ऑफिसर, जी० एम० बाडू, लीडिंग फायरमैन व ए० ए० भट्ट, फायरमैन ने उत्कृष्ट वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक अग्निशमन सेवा पदक के नियम 3(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5(क) के अंतर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 8 मई, 1995 से दिया जाएगा।

गिरीश प्रधान
निदेशक

सं० 188-प्रज/95—राष्ट्रपति, निम्नलिखित अधिकारियों को शौर्य प्रदर्शन के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

श्री एस० धनपति,
अग्निशमन अधिकारी एवं सहायक सुरक्षा अधिकारी,
मद्रास पोर्ट ट्रस्ट,
भूतल परिवहन मंत्रालय,

श्री ए० बरदराजन,
फायरमैन,
मद्रास पोर्ट ट्रस्ट,
भूतल परिवहन मंत्रालय

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

31 अक्टूबर, 1994 की सुबह मद्रास पोर्ट ट्रस्ट के मारगजिंग यार्ड के भारतीय इस्पात प्राधिकरण के प्लाट में छूट-पुट विस्फोटों के साथ आग लगने की एक बड़ी बार-दात हुई। यार्ड में कुछ खतरनाक रासायनिक पदार्थ भारी मात्रा में रखा हुआ था। पानी के संपर्क में आने पर उसमें रासायनिक क्रिया हो सकती थी। लगातार बारिश होते रहने के कारण पानी के साथ क्रिया वाले इस रासायन में आग लग गई थी जिससे विस्फोट भी हो रहे थे। 31 अक्टूबर, 1994 के लगभग 02.05 बजे, इस संकट की सूचना मिलने पर श्री एम० धनपति, अग्निशमन अधिकारी एवं सहायक सुरक्षा अधिकारी मद्रास पोर्ट ट्रस्ट के अग्निशमन कमियों के साथ तुरन्त घटनास्थल पर आ पहुँचे। उन्होंने पाया कि 20 फुट वाले 5 कंटेनरों में आग लगी हुई है और जहरीला धुआँ निकलकर पास स्थित केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की बैरकों में तथा निकटवर्ती सत्यानगर हटमेंट्स की ओर फैल रहा है।

फायरमैन बरदराजन की सहायता से, श्री धनपति बिना समय गंवाए तुरन्त संकटपूर्ण स्थिति का सामना करने के लिए आगे बढ़े। उन्होंने आग लगे एक कंटेनर को तोड़ डाला तथा विशेष ड्राई पाउडर रासायनों से आग को बुझा दिया। इसी बीच कुछ रासायनिक ड्रमों में हुए विस्फोट से आग आसपास फैल गई, परन्तु सर्वश्री धनपति तथा बरदराजन ने हिम्मत नहीं हारी तथा स्थिति का डटकर सामना किया। बड़ी मेहनत से उन्होंने आसपास की जगहों पर पानी फँककर तथा फोम के इस्तेमाल से आग पर काबू पा लिया। इस तरह अपनी जान को जोखिम में डालकर जहरीली गैस से भरे वातावरण में लम्बे समय तक जूझते रहकर बाकी 32 कंटेनरों को बचा लिया। इसी कोशिश में, वे दोनों आग से गंभीर रूप से झुलस गए जिसके लिए उन्हें बाव में लम्बे समय तक अस्पताल में इलाज कराना पड़ा।

इस घटना में सर्वश्री एस० धनपति, अग्निशमन अधिकारी एवं सहायक सुरक्षा अधिकारी व ए० बरदराजन, फायरमैन ने उत्कृष्ट वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक अग्निशमन सेवा पदक नियमावली के नियम 3(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5(क) के अंतर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 31 अक्टूबर, 1994 से दिया जाएगा।

गिरीश प्रधान
निदेशक

लोक सभा सचिवालय

(रेल अभिसमय समिति शाखा)

नई दिल्ली-110001, 19 सितम्बर, 1995

सं० 4/2/91-प्रार० सी० सी०--श्री राम नगीना मिश्र, सदस्य, लोक सभा, को श्री राम नाईक द्वारा समिति की सदस्यता से त्याग पत्र देने के कारण हुए रिक्त स्थान पर रेलवे उपक्रम द्वारा सामान्य राजस्व को देण लोभांश की तथा सामान्य वित्त की तुलना में लवे वित्त से संबंधित अन्य आनुगंगिक मामलों की पुनरीक्षा करने संबंधी संसदीय समिति

के सदस्य के रूप में कार्य करने के लिए 12 सितम्बर, 1995 से मनोनीत किया गया है।

प्रार० सी० गुप्ता
अपर सचिव

(वित्त संबंधी स्थायी समिति शाखा)

नई दिल्ली-110001, 25 सितम्बर, 1995

सं० 7/1/95/एफ० सी०--श्रीमती मारगथम चन्द्रशेखर, सदस्य, लोक सभा को 22 सितम्बर, 1995 से वित्त संबंधी स्थायी समिति की सभापति नियुक्त किया गया है।

सतीश लूम्बा
उप सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th August 1995

No. 178-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of Ashoka Chakra for most conspicuous bravery to :—

Major Rajiv Kumar Joon (IC-50443) SC 22 Grenadiers
(Posthumous)

(Effective date of the award 16th September, 1994)

On 16th September 9, a search party under Major Rajiv Kumar Joon carried out cordon and search operation in village Arian Deosar in District Anantnag of Jammu and Kashmir.

At 1300 hours Major Rajiv Kumar Joon, discovered two militants hiding inside a house in a wall between the door and the ceiling of the room. The hiding militants were persuaded to come out but they sprang out of the hideout firing indiscriminately all over the room and at the search party located at the doorway, injuring a member of the search party.

Major Rajiv Kumar Joon, realising the gravity of the situation, immediately ordered his search party to cover and engage the militants. The trapped militants jumped into the basement of the house and brought heavy volume of fire on the search party from an opening. Major Rajiv Kumar Joon, sensing that his comrades could not engage the well entrenched militants effectively from their location, crawled up to the loophole on the outer side of the basement at great risk to his personal safety, lobbed two hand grenades into the loophole, and fired into it killing one hard core Pakistan trained militant. The other militant continued firing from the corner of the basement with renewed vigour.

At this moment, Major Rajiv Kumar Joon, risking his life for the safety of his comrades, daringly approached the loophole to effectively engage and neutralize the concealed militant. In this closest of the close encounters, the Major and the militant came face to face with each other. The latter having the advantage of darkness, fired at Major Rajiv Kumar Joon injuring him grievously on the throat damaging his chest.

Major Rajiv Kumar Joon, grievously wounded and profusely bleeding, refused to move back and in a final bid sprayed bullets all over the basement killing the militant. In this valiant act of extreme courage and sacrifice, Major Rajiv Kumar Joon single handedly killed both the armed militants saving the lives of his comrades. The two killed militants were later indentified as Bashir Ahmed Padar alias

Nur-Ur-Haq, self styled Company Commander of Hizbul Mujahideen and the assassing of Ex Cabinet Minister of Jammu and Kashmir and Mustaff Ahmed Khande 'Mudasar'. Two AK 56 Rifles with 3 magazines AK 56 and 22 rounds of ammunition were also recovered in this operation.

Major Rajiv Kumar Joon, thus displayed conspicuous courage and gallantry of the highest order, undoubtedly beyond the call of duty and laid down his life fighting the militants.

G. B. PRADHAN, Director

New Delhi, the 15 August 1995

No. 179-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of "Kirti Chakra" to the undermentioned persons for acts of conspicuous gallantry :—

1. 2584167 Havildar Dhanaraj Muthappan, Madras
(Posthumous.)

(Effective date of the award : 12th July, 1994)

Havildar Dhanaraj Muthappan was the commander of one of the cordon parties carrying out cordon and search of village Noham in Pulwama district of Jammu and Kashmir on 12 July 1994.

Two anti national elements (ANEs) trapped in the cordon, tried to escape by firing in different directions. They got into a paddy field and tried to crawl away under the cover of grass and thick foliage. Havildar Muthappan, who was the cordon party commander, on observing some movement of grass, immediately organised a search of the field very tactfully. He was personally leading one such group inside the field when he suddenly came face to face with the two militants. A sudden and brief fire fight at close quarter ensued. Havildar Muthappan was grievously injured during the exchange.

In spite of being grievously injured and bleeding profusely, Havildar Muthappan displaying heroism and chivalry of exceptional dimensions did not give up but charged at the militants with renewed vigour and shot them dead on the spot. However, in this action he was once again hit by bullets in the chest and succumbed to his wounds making the supreme sacrifice while carrying out his duty. Two rifles AK-56, six magazines and 82 rounds of AK 56 and one stick Grenade were recovered from the dead militants.

Havildar Dhanaraj Muthappan, thus, displayed exceptionally high degree of dynamism, unparalleled courage and total devotion to duty.

2. 13742820 Lance Havildar Nek Singh, SC, Jammu and Kashmir Rifles (Posthumous)

(Effective date of the award : 7th August, 1994).

Lance Havildar Nek Singh, Shaurya Chakra was of Headquarters Company Second Battalion, The Jammu and Kashmir Rifles.

On 07th August 1994 the battalion had established a cordon at Village Hassarpur Tabela, Tehsil Kulgam District Anantnag at 1200 hours. From here a patrol was sent to seek encounter with the militants towards village Khudawain of same Tehsil and District.

As the patrol neared village Rahpur Tehsil Kulgam it came under effective fire of AK 56 rifle of militants because of which one Non Commissioned Officer sustained gunshot wound in his thigh. Lance Havildar Nek Singh, SC was the first to see the two militants who after firing were trying to escape. Immediately he along with an officer ran after the militants who meanwhile had run into the village. The militants stopped and took cover behind a wall. One of them quickly opened effective fire at his two pursuers. Realising that the officer was directly in the line of fire Lance Havildar Nek Singh SC pushed him aside and engaged the militants in a fierce face to face encounter. One of them was killed on the spot. The other militant picked up the weapon of the fallen militant and continued to fire. In the exchange of fire Lance Havildar Nek Singh, SC sustained serious gunshot wounds in the left side of abdomen and left thigh.

Unmindful of his injuries and continuous bleeding, the NCO did not stop and displaying unparalleled heroism and courage closed on to the militant and shot him dead. Immediately thereafter the NCO's left thigh bone which had been hit broke completely and he collapsed on the ground. He was evacuated to 92 Base Hospital by helicopter where he succumbed to his injuries on 15th August 94.

His gallant action resulted in the killing of two Pak's trained dreaded militants of Hizbul Mujahideen and recovery of one AK 56 Rifle and ammunition.

Lance Havildar Nek Singh, Shaurya Chakra, thus displayed conspicuous bravery unmindful of his personal safety, in the highest traditions of the Indian Army.

3. Captain Arjun Singh Guleria (IC-48059) Artillery.

(Effective date of the award : 6th September, 1994)

On 06th September 1994, during cordon and search of village Dadi Naubag of Srinagar District, the party under Captain Guleria came under heavy automatic fire from a house. He immediately cut off the escape routes of the militants inside the house. Three militants had taken cover in a double storeyed house and were firing and constantly changing rooms. The fire fight carried on for three hours.

Captain Guleria using natural cover and fieldcraft, crawled up to the house totally unmindful of his personal safety and lobbed a grenade inside a room through a window, killing one of the militants inside instantly. The two remaining militants ran up to the first floor and one of them tried to fire at Captain Guleria from the first floor window. With great presence of mind and razor sharp reflexes, Captain Guleria looked up and shot the militant dead. He now climbed into the house through a ground floor window and tracked the third militant to the first floor. Thereafter, he threw a grenade into the room. As he did so, the militant came running out firing. Captain AS Guleria taking cover, with great ingenuity and dauntless courage, shot the third militant also dead. Three rifles AK-56, nine magazines and 70 rounds of AK 56 were recovered from the three killed militants who were all identified as Afghan mercenaries of Harkat-ul-Ansar group.

Captain Arjun Singh Guleria, thus, displayed indomitable courage and a high standard of military leadership in the face of militants' fire.

4. 2982680 Lance Naik Mahaveer Singh Rajput, Rajput. (Posthumous)

(Effective date of the award : 19th September, 1994)

On 19th September 1994, two companies carried out flushing cum seeking encounter operation in area of village Buchhu of Baramulla District in Jammu and Kashmir. The village is just south of National Highway.

At about 1135 hours, while the Company under Major M. Maniraj, was carrying out flushing of the paddy fields west of village Buchhu, two militants hiding in the fields suddenly stood up and started firing indiscriminately at the Company Commander's party. Lance Naik Mahaveer Singh Rajput, in a swift action displaying exemplary and extraordinary courage, pushed his Company Commander and colleagues aside of the line of fire and took on the brunt of fire, thus saving the lives of his Company Commander and colleagues. Lance Naik Mahaveer Singh Rajput received gun shot wound in his left shoulder. Though mortally wounded and bleeding profusely, Lance Naik Mahaveer Singh Rajput continued to move ahead and shot dead both the dreaded militants of Hizbul Mujahideen in very close encounter. He was immediately evacuated to 92 Base Hospital where he succumbed to his injury. This valiant action of Lance Naik Mahaveer Singh Rajput paved the way for elimination of six more hardcore militants of Hizbul Mujahideen, who were holding a meeting and finalising plans, to ambush Army Convoys moving on the National Highway.

Lance Naik Mahaveer Singh Rajput, thus, displayed conspicuous gallantry, exceptional courage and devotion to duty.

5. Captain Devashish Sharma (MR-6368), AMC. (Posthumous)

(Effective date of the award : 10th December, 1994)

On 10th December 1994, during cordon and search of village Dangarpura of Sopore Tehsil in Baramulla District of Jammu & Kashmir one search party under an officer drew militants' fire from few houses. As a result, one officer and one NCO sustained gun shot wound on right arm and on left hand respectively. Captain Devashish Sharma, Regimental Medical Officer volunteered and moved under heavy fire to extricate and render timely first aid to the casualties. In the continuing exchange of fire with militants, two more Sepoys were badly injured. Once again Captain Sharma moved under fire to extricate and render first aid to both the Sepoys.

Later in the day, one militant hiding inside a house started firing indiscriminately and tried to escape. In this heavy exchange of fire, Captain Devashish Sharma sustained gun shot wound on left thigh. One NCO was also injured. Despite bleeding profusely, Captain Devashish Sharma crawled under fire for about twenty yards, brought down aimed fire and shot dead the foreign mercenary trying to escape. Displaying high sense of duty, medical ethics and unparalleled comradeship, he rendered first aid to the injured NCO without caring for his own injury. Although being himself critically injured, he evacuated the NCO in the first helicopter sortie and himself in the next sortie. Captain Devashish Sharma, evacuated to 92 Base Hospital by helicopter, succumbed to his injuries later.

Captain Devashish Sharma, thus, displayed high sense of duty and unparalleled comradeship with total disregard to his personal safety.

6. IC-47921 Subedar Hem Bahadur Thapa, Assam Rifles. (Posthumous)

(Effective date of the award : 14th December, 1994)

On 14th December 1994, Subedar Hem Bahadur Thapa volunteered to join a patrol, which had an encounter with NSCN(S) hostiles in general area Sanalok River in Manipur. Subedar Hem Bahadur Thapa immediately took command of the situation and assaulted the hostiles position from a flank. During the assault he was fatally injured by hostile

fire on his right hand. Despite the injury and against all odds he continued to motivate and lead the assaulting troops on the the hostiles' position. During the assault, he was again hit by another undergrounds' bullet on the head. As a result he started bleeding profusely and fell down on the ground. Still he did not give up and got up again to assault the hostiles' position. Staggering, he continued to inch forward and simultaneously fired his AK-47 at the position, thus depriving the hostiles from fulfilling their aim and inspiring his group to another lightning assault against the militants.

Mortally wounded, he again fell down on ground and started to crawl towards the hostiles. He lobbed a grenade at the hostiles, thus killing one of them who was charging towards him to snatch his personal weapon. His undaunting courage forced the hostiles to abandon their position in panic, leaving behind a large quantity of arms, ammunition, equipment, incriminating documents and the dead bodies of their two colleagues alongwith their personal weapons.

Subedar Hem Bahadur Thapa, thus, displayed exemplary act of gallantry and made the supreme sacrifice.

7. No. 8425434H Naik (GD), Bhim Singh, BRDB,
(Posthumous)

(Effective date of the award : 24th March, 1995)

Naik Bhim Singh, was detailed for providing protection to BRO personnel working on Manu-Kanchanpur road in an insurgency affected area of North Tripura.

On 24 Mar 95 at about 0900 hrs, Naik Bhim Singh was manning a Light Machine Gun mounted on a vehicle. When the vehicle was negotiating a steep gradient between two hillocks, it came under heavy automatic fire from all sides. The first volley of bullets hit the tyres and also ripped open his intestines. With total disregard to the pain and ignoring the profuse bleeding, he returned fire on both the hillocks. As the vehicle stopped, he realized that everybody had become sitting targets. Yet, he did not abandon his post and provided covering fire to his party while exhorting them to jump out and take positions. His courage injected vigour into his comrades. Naik Bhim Singh engaged the insurgents relentlessly and gained precious time for his party to fan out and fire. Another volley of bullets pierced his right hand but undeterred the twice wounded Naik Bhim Singh fitted a fresh charged magazine into the LMG. At this point bullets hit the charged magazine which burst killing him on the spot.

Naik Bhim Singh displayed gallantry, cool courage unflinching devotion to duty, presence of mind and passion for the safety of his comrades with utter disregard to his own safety. action not only forced the insurgents to turn tail, but also ensured that none of his comrades were even injured.

Naik Bhim Singh, thus, displayed unflinching devotion to duty, exemplary courage and made the supreme sacrifice.

G. B. PRADHAN,
Director

No. 180-Pres/95—The President is pleased to approve the award of "Vir Chakra" for acts of gallantry to :—

JC-225838 Naib Subedar Avtar Singh, 14 Sikh Light Infantry (Posthumous)

(Effective date of the award : 22nd March, 1994)

Naib Subedar Avtar Singh was the post commander of Bhajan post. On 22 March 94, the enemy post across the line of actual control opened up with amassed automatic and heavy calibre weapons on post Bhajan. With the aim of forcing eviction, Naib Subedar Avtar Singh motivated his men, instilled the required courage and put them into action.

The post held on like a rock and continued to inflict injury on enemy and maintain vigil unflinchingly. To discourage enemy from firing at Bhajan, attack by fire on enemy post Spur was planned. The needed weapons were amassed. Naib Subedar volunteered to be the detachment commander. The detachment guided and led by him went into action and systematically destroyed the enemy post by fire. By the fourth day enemy post Spur had turned into a mound of rubble. Five bunkers has perished and enemy was holed up inside the last bunker. In desperation enemy posts surrounding Bhajan opened up with all available weapons. Naib Subedar Avtar Singh and his motivated party continued with the task. As the last bunker started crumbling, the enemy fire increased in strength. At 0850 hours on 29th March 1994, Naib Subedar Avtar Singh was hit by the enemy burst of a heavy weapon while he was actively demolishing the last bunker. The bullet pierced Avtar Singh's neck. The brave Junior Commissioned Officer made the supreme sacrifice for the country.

Naib Subedar Avtar Singh, thus, displayed conspicuous courage and valour in the face of the enemy.

G. B. PRADHAN
Director

No. 181-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of "Bar to Shaurya Chakra" for acts of gallantry to :—

2676892 Naik Jardish Ahmed, SC Grenadiers

(Effective date of the award : 14th August, 1994)

On 14 August 1994, during cordon and search of village Taimar in District Anantnag of Jammu and Kashmir auspicious movement atop a hill feature to the North of the village was noticed. Two parties were immediately sent which managed to go as close as 100 metres undetected were they were fired upon by a group of five militants. Despite heavy volume of fire, Naik Jardish Ahmed closed in on the militant who was covering the escape of the other four and shot him dead. The other militants lobbed two hand grenades at the party and tried to escape in different directions.

Naik Jardish Ahmed, immediately rushed forward and exhibiting conspicuous gallantry crawled as close as seven metres on to the militants who were bringing down intense effective fire from behind the boulders. The militants lobbed two more grenades at Naik Jardish Ahmed and brought down volley of automatic fire. Even though heavily outnumbered and despite such grave danger, the brave Naik crawled closer and injured three militants. The group of hard core armed militants in their final bid threw one more grenade and charged in danger. Naik Jardish Ahmed, without losing a moment rolled over to the nearest effective cover, closed in further and killed all the three hardcore Pakistan trained militants. This gallant act also resulted in recovery of 4 AK-56 Rifles, 10 magazines, 48 rounds of ammunition and 2 Hand Grenades.

Naik Jardish Ahmed, Shaurya Chakra, thus, displayed bravery courage and devotion to duty in his fight against the militants.

G. B. PRADHAN
Director

No. 180-Pres/95—The President is pleased to approve the award of "Vir Chakra" for acts of gallantry to :—

JC-225838 Naib Subedar Avtar Singh, 14 Sikh Light Infantry (Posthumous)

(Effective date of the award : 22nd March, 1994)

Naib Subedar Avtar Singh was the post commander of Bhajan post. On 22 March 94, the enemy post across the line of actual control opened up with amassed automatic and heavy calibre weapons on post Bhajan. With the aim of forcing eviction, Naib Subedar Avtar Singh motivated his men, instilled the required courage and put them into action.

No. 182-pres/95.—The President is pleased to approve the award of "Shaurya Chakra" to the Undermentioned persons for acts of gallantry :—

1. Captain D Padma Kumar Pillay (IC-47634) Guards.

(Effective date of the award : 25 January 1994)

Captain D Padma Kumar Pillay was tasked to search village Longdipabram in Tamenglong district in Manipur on

25 January 94, Search commenced at the break out of first light on 25 January 1994. Hardcore National Socialist Council of Nagaland (I) militants were taking shelter in a house. Captain Pillay alongwith Subedar Raghuvir Singh and his patrol party of 40 Other Ranks established effective cordon taking militants by total surprise.

Captain Pillay alongwith Guardsman Gambhir broke open the door and drew AK-47 bursts. The militants also threw a grenade. Captain Pillay got injured on leg by grenade splinters. The officer charged ahead boldly and in the process received two more bullet injuries on his arm and chest. Captain Pillay, unmindful of his personal safety, crawled back to a cover and started engaging the militants. He pulled out a grenade and threw into the house. Captain Pillay fought on resolutely inspite of grave injuries inspiring his men, and ensuring surrender of militants. He fell to ground only when his mission was completed. The success of this operation helped Army to gain moral ascendancy over insurgents.

Captain D Padma Kumar Pillay, thus, displayed outstanding leadership qualities and exceptional courage in the face of militants.

2. 4471086 Sepoy Nishan Singh, Sikh Light Infantry.
(Posthumous)

(Effective date of the award : 15 March 1994)

On 15 March 1994, a cordon and search operation was launched in Doru, a town-ship in South Anantnag District of Jammu and Kashmir. The troops came under heavy fire from the market area, a group of huts and from the hill tops. In the fierce gun battle that followed anti national elements (ANEs) fled from the market area towards the cluster of huts and hill tops. 'A' Company was then ordered to encircle the cluster of huts. Sepoy Nishan Singh was with the Company Headquarter which approached the group of huts in the lead. While in the process of encircling, Sepoy Nishan Singh suddenly encountered an armed ANE about to open fire on his Officer Commanding and colleagues. This brave soldier in an act of absolute selfless devotion ran towards the line of fire, shielding his Officer Commanding and colleagues took the burnt of militants' fire on himself. Thereafter, inspite of being gravely wounded, he charged at and killed the ANE, who was later identified as Niaz Mohammed a mercenary. Sepoy Nishan Singh later succumbed to his injuries.

Sepoy Nishan Singh, thus, displayed valour and selfless devotion to duty in saving the lives of his colleagues at the cost of his own life.

3. Captain Arvind Vikram Singh (IC-51145),
Garhwal Rifles. (Posthumous)

(Effective date of the award : 22 May 1994)

Captain Arvind Vikram Singh Garhwal Rifles volunteered to lead an ambush on track Palhalan Wusman Khul in Jammu and Kashmir on night 22-23 May 1994 to check the anti national elements (ANEs) from moving with impunity during hours of darkness.

On 22 May 1994 at 2230 hours suspicious movement of three persons was observed from the direction of Village Palhalan. The Officer let the ANEs come up to the centre of the ambush and in the ensuing fierce fire fight killed one of them. The other ANEs directed heavy volume of fire and lobbed grenades to prevent troops from closing in but this did not deter Captain Arvind Vikram Singh and his party and with unflinching courage they shot dead one more ANE and overpowered the other armed ANE alive. Two Rifles AK 56 with six magazines, one grenade and 147 rounds were recovered.

After conducting operations at village Hayan at about 1920 hours on 07 July 94 while crossing the Indus river over an improvised three feet wide wooden bridge Rifleman Digamber Singh lost balance and fell into the fast flowing current of river Indus. Captain Arvind Vikram Singh jumped in the torrential current of the river to save his company Jawan. Negotiating through huge boulders, managed to grab

hold Rifleman Digamber Singh and tried to bring him to the safety of the main land but himself got swept away in doing so and laid down his life.

Captain Arvind Vikram Singh, thus, displayed inspiring leadership, bravery devotion to duty and spirit of self sacrifice.

4. Major Manoj Natarajan (IC-47064), 10 Bihar

(Effective date of the award : 18 June 1994)

On 18 June 1994, 10 Bihar cordoned off village Shahgund at midnight. At about 1200 hours, two militants who tried to break through the cordon were pursued by Major Manoj Natarajan's Company. These two militants ran into an out-house which was quickly surrounded by Major Manoj Natarajan and six men of his Company. As soon as Major Manoj and his team approached the house they came under heavy fire from the house. Major Manoj on closing in the house lobbed a grenade which forced the militants to jump out of the window and run towards Ninagali plantation. This gave opportunity to his team to eliminate both the anti national elements.

At 1500 hours Major Manoj again alongwith his team rushed and cordoned off another house where two more militants were hiding. As Major Manoj Natarajan approached towards the main door, heavy volume of fire was brought upon his team. Major Manoj Natarajan asked ANE's to surrender but they fired again on his team. Major Manoj Natarajan, in total disregard to his personal safety stormed into the house. Anti national elements then threw a grenade and despite taking evasive action, Major Natarajan received a splinter in his right eye. Though blinded momentarily with right eye the officer shot dead the dreaded Area Commander of A1 Barq and his operator, without any substantial damage to his men.

In a matter of four hours Major Manoj Natarajan had killed four terrorists including one Area Commander, one Company Commander, Section Commander and a radio operator and recovered two AK-56 rifles, five magazines of rifle AK-56, 119 rounds of ammunition of AK-56, one stick grenade, one Radio Set and 30 kg of explosive.

Major Manoj Natarajan, thus, displayed conspicuous gallantry and leadership in killing four dreaded militants.

5. IC-188619 Subedar Mayan Gopal, ((Posthumous))
Madras

(Effective date of the award : 18 June 1994)

Subedar Mayan Gopal raided a house of a known hardcore militant in village Karimabad of Pulwama District of Jammu and Kashmir on 08 June 94 in broad day light. Unmindful of his personal safety he moved in swiftly with surgical precision and caught all the inmates of the house by surprise and recovered two Rocket Propelled Grenade Launchers after 41 hours search without having fired a single shot.

Once again, during the cordon and search of village Romu in Pulwama District on 18 June 94, observing suspicious movements along a nallah, Subedar Mayan moved to the adjacent high ground to intercept the militants on orders of the company commander. Subedar's party and militants simultaneously reached the high ground. The Subedar personally led the charge on militants against stiff and heavy automatic fire and killed one of them. Despite being grievously wounded he continued the chase of yet another militant.

Displaying unparalleled heroism and courage, he closed in with the militant who hid himself in a small creek. At close quarter, the militant stood up face to face with the Subedar and they both fired simultaneously. The militant was shot dead by Subedar Mayan Gopal but during the fire fight he was again hit by bullets in the neck and died instantly. On mopping up, two dead bodies of militants alongwith two rifles, grenade launcher attach-

ment, two pistols with huge quantity of assorted ammunition and other warlike stores were recovered.

Subedar Mayan Gopal, thus, displayed courage, devotion to duty and spirit of self sacrifice.

6. Major Ranveer Singh (IC-41244),
Artillery

(Effective date of award : 28 July 1994)

On 28 July 94 Major Ranveer Singh was detailed by the Officer Commanding 12 Recce & Observation Flight for a Casualty Evacuation Mission in OP HIFAZAT in OP ORECHID as a pilot in command of Air Craft Z-391 with Capt RS Malik as co-pilot. He was tasked to evacuate five battle casualties from the thick of operation, which was going on in general area Thembram. The casualties were required to be evacuated from a very difficult terrain wherein only a small patch of the jungle had been cleared to land an aircraft. By exhibiting high standards of professional skill, three casualties were evacuated in the first trip, during which the helicopter was fired upon by an underground. He immediately checked out all the parameters of the machine and having ascertained them to be safe, he proceeded to drop the casualties to Chalwa. Knowing fully well that the aircraft may be fired upon again, he pressed on to pick up the remaining two serious battle casualties from the op. area. After a quick mental appreciation, he took off with the casualties using unconventional flying techniques, and selected a safe route to land at Chakabama to get the seriousness of damage on the air craft checked and also to provide first aid to the casualties. During the post flight check the pilot detected a through bullet hole in one of the main rotor blades. In spite of the damage to the aircraft the aviator undertook the mission.

Major Ranveer Singh, thus, displayed courage, determination and dedication to duty with utter disregard to his personal safety.

7. Second Lieutenant Vipin Bhatia (IC-52877),
Army Ordnance Corps.

(Effective date of the award : 28 July 1994)

On 28 July 1994 based on specific information, 27 RAJPUT carried out cordon and search operation in Village Reban. At about 1415 hours, while Commanding Officer's Quick Reaction Team and one company approached village Reban, militants opened heavy volume of Universal Machine Gun and AK fire on the troops.

Second Lieutenant Vipin Bhatia immediately organised his platoon to outmanoeuvre the firing militants. Leading his platoon from the front and setting a personal example, Second Lieutenant Vipin Bhatia closed in with the militants despite continuous and heavy volume of fire by them totally disregarding personal safety. Second Lieutenant Vipin Bhatia showing exemplary leadership qualities and bravery, personally shot dead one of the notorious militants who was also a company commander of MJF and recovered one Rifle AK 56 from the slain militant. In the fire fight Second Lieutenant Vipin Bhatia sustained bullet injuries on both his thighs. Undeterred by the injury sustained, he continued to advance and killed another dreaded Pakistan trained militant and recovered one rifle AK 56 from the dead militant. In the operation that day, six militants were killed including a battalion commander and a company commander of the militant outfit MJF and large quantities of arms and ammunition were recovered.

Second Lieutenant Vipin Bhatia, thus, displayed conspicuous bravery and leadership qualities with utter disregard to his personal safety.

8. 3100546 Rifleman Narayan Singh, (Posthumous)
Assam Rifles

(Effective date of the award : 28 July 1994)

During 'OP Blue Hill' Rifleman Narayan Singh was forming part of the raid group of a raid on a well fortified

National Socialist Council of Nagaland (Isaac/Muivah) (NSCN) training camp at Thembram Village in Manipur. On 28 July 1994 the leading elements of the raid group were still pinned down under heavy automatic and grenade fire from the undergrounds, who were holding a well fortified bunker giving them strategically vantage position. At this juncture Rifleman Narayan Singh showing exemplary courage and total disregard to his personal safety charged at the bunker, all the while firing into the port holes till such time a grenade blast mortally wounded him, and later he succumbed his injuries on 01 Aug 1994. This exemplary action paved the way for the final clearance of the bunker and successful execution of the raid in which nine NSCN (Isaac/Muivah) undergrounds were killed, twenty two sophisticated weapons alongwith a large quantity of ammunition recovered.

Rifleman Narayan Singh, thus, displayed rare courage, devotion to duty and spirit of self sacrifice.

9. 3-00818 Rifleman Prasidhan Singh, (Posthumous)
Assam Rifles

(Effective date of the award : 28 July 1994)

During 'OP Blue Hill' Rifleman Prasidhan Singh was part of the raid group during a raid on a well fortified National Socialist Council of Nagaland (Isaac/Muivah) (NSCN) training camp at Thembram village in Manipur. At about 0530 hours on 28 July 94 as the raiding group was closing in on the NSCN camp the leading elements were pinned down under heavy automatic and grenade fire from the undergrounds from a vantage position of a well fortified bunker.

At this operationally crucial juncture Rifleman Prasidhan Singh crawled up the steep slope and showing exemplary courage and total disregard to his personal safety, in an atmosphere charged with flying bullets and grenade blasts, charged the bunker returning fire into its port holes thus silencing one of the undergrounds in the bunker. However, in this valiant action Rifleman Prasidhan Singh was hit by an AK-47 burst on his right thigh and hip region due to which he fell down. Bleeding profusely and despite ebbing strength he went on firing at the bunker till such time this brave son of the soil breathe his last. This exemplary action totally inspired his group which led to the clearance of the bunker and successful execution of the raid, in which nine NSCN (Isaac/Muivah) undergrounds were killed, twenty two sophisticated weapons and large quantity of ammunition captured.

Rifleman Prasidhan Singh, thus, displayed valiant act of exemplary courage and made the supreme sacrifice of his life while fighting the undergrounds.

10. 2684649 Grenadier Panjku Lal,
Grenadiers

(Effective date of the award : 3 August 1994)

On 03 August 1994, Grenadier Panjku Lal was detailed on an ambush, south of Hammu Post to thwart the move of anti national elements towards Dardpura, a village frequented by them.

At approximate 2040 hours Grenadier Panjku Lal noticed a group of four anti national elements moving towards his platoon. He immediately alerted the Commander of the party. Grenadier Panjku Lal waited till the terrorists came upto approximately 15 yards from his position before opening fire, killing one on the spot. However, one of the bullets fired by him hit the grenade being carried by the terrorist's on person, which burst and resultantly Grenadier Panjku Lal got hit by a sharpened in the chest. Meanwhile, the remaining anti national elements opened up with a heavy volume of automatic fire in a bid to escape, under the cover of darkness. Undeterred by the heavy volume of fire aimed at him and unmindful of his injury, Grenadier Panjku Lal gave chase alongwith his party commander and killed two more terrorists. The fire fight lasted approximately 20 minutes, throughout which Grenadier Panjku Lal bleeding profusely from the wound received by the grenade sharpened, refused to give up and subsequently, after

allowing himself to be given first aid to plug the wound, joined in the search operation till personally ordered by the Company Commander to be evacuated. The encounter resulted in killing of three anti national elements and recovery of one Universal Machine Gun, three rifles AK-56, one rifle sniper, two pistols, a radio set, and a large quantity of ammunition.

Grenadier Panjku Lal, thus, displayed rare courage and dedication beyond the call of duty with utter disregard to his personal safety.

11. JC-41202 Naib Subedar Surjit Singh SM,
9 Para Commando (Posthumous)

(Effective date of the award : 12 August 1994)

9 Para Commando led by Naib Subedar Surjit Singh, SM was launched to seek and destroy the militants in general area Dushan forest in Jammu and Kashmir. The militants were supposedly planning disturbances during Independence Day.

Naib Subedar Surjit Singh, SM a decorated veteran of OP Pawan in Sri Lanka divided his troop in two halves and selected the more dangerous area for his half of the troop. At 0500 hours on 12 August 94 the valiant JCO managed to surprise the ANEs who had cunningly sited themselves in a manner that their location could not be approached without being detected. As soon as the militants were surprised, fierce fire fight ensued. The militants were bringing down effective fire on the party of late Naib Subedar Surjit Singh, SM. On seeing that the militants' fire is likely to give them a chance to get away unscathed, the gallant JCO decided to charge them. Galvanised by the heroic example set by their leader, the party assaulted the militants. Surprised by this unexpected charge the militants took to their heels. Despite being hit by a number of bullets and mortally wounded, the fallen Junior Commissioned Officer refused all attention but kept on urging his men to tackle the militants.

Naib Subedar Surjit Singh SM, thus, displayed raw courage, conspicuous gallantry, outstanding leadership and selfless devotion to duty in order to thwart the designs of ANE's and made the supreme sacrifice.

12. 2582042 Naik Varsi Vasudev Rao, (Posthumous)
6 Madras.

(Effective date of the award : 13 August 1994)

On 13 August 1994, intelligence report indicated presence of some undergrounds in village Umathel, Thoubal District in Manipur. Based on these reports Officer Commanding Charlie Company despatched a column to seek and destroy the undergrounds. Naik Varsi Vasudev Rao was the section Commander of leading section.

When the column reached near village Umathel and was about to search the area, suddenly it came under heavy and effective fire from the Kakching Khunao College complex. Naik Varsi Vasudev Rao immediately deployed his section and directed his men to bring down heavy and accurate fire on the undergrounds hiding in the college complex. He himself led his men on a flanking in position, simultaneously firing at the undergrounds. During this manoeuvre Naik Varsi Vasudev Rao was hit by a bullet on his chest. Even while bleeding profusely, he led his men with extreme courage and total and utter disregard to his own safety. He kept on spurring his men to keep moving and firing thereby achieving the task given to his section till he succumbed to the injuries on 14th August, 1994. This supreme sacrifice of life resulted in subsequent killing of nine undergrounds and apprehension of one underground of joint group of National Socialist Council of Nagaland and United National Liberation Front. Amongst those killed was Arca Commander of National Socialist Council of Nagaland, self styled Lieutenant Thumpa Anal. Search of the area resulted in recovery of large quantity of ammunition.

Naik Varsi Vasudev Rao, thus, displayed extreme courage at the cost of his own life.

13. Captain Jasbir Singh Kaberwal (IC-50950)
Bihar

(Effective date of the award : 3 September 1994)

On 03 September 1994, near village Gundbon one ambush party led by Captain Jasbir Singh Kaberwal saw some militants sneaking out of the village and moving towards village Naidkhai.

Seeing this, Captain Kaberwal showing great acumen and maturity divided his party into two teams and engaged the militants by his sustained and accurate AK fire. This resulted in the militants opening up with their AK-56 Rifles from a very close range. Captain JS Kaberwal showing utter disregard to his personal safety, in a swift action killed one militant, a dreaded platoon Commander of Muslim Janbaz Force and recovered one Rifle AK-56, four magazine and 21 rounds. Two militants hiding in the paddy fields, threw three hand grenades towards Captain JS Kaberwal, but the officer showing unmatched presence of mind and timely evasive action saved himself and his men. Having spotted these militants, and undeterred by their constant heavy automatic fire, Captain JS Kaberwal closed on to the militants and shot dead the second militant, a dreaded area commander of AL Barq by bringing down accurate fire from his AK-47. The third militant, as a last resort charged at Captain JS Kaberwal, who had almost exhausted his ammunition. The officer using his lightning reflexes got entangled in a hand to hand fight, overpowered the militant, snatched the militant's weapon and shot him dead.

Captain Jasbir Singh Kaberwal, thus, displayed conspicuous bravery, dogged determination with utter disregard to his personal safety in the face of intense militants' fire.

14. 2478603 Sepoy Ranjit Singh,
Punjab (Posthumous)

(Effective date of the award : 3 September 1994)

On 03 September 1994, 5 Rashtriya Rifles battalion laid cordon in Hazratbal Mohalla locality of Anantnag in Jammu and Kashmir. At about 1230 hours, information was received from a source that Bilal Ahmed, District Commander of Tehriql Mujahideen was hiding somewhere in a cluster of houses in the locality. When the search party entered the house of one Bashir Ahmed, Sepoy Ranjit Singh went in first covered by another sepoy. Rest of the search party followed behind them.

When the search party reached the kitchen and started removing the cupboards, looking for possible hideout, Bilal Ahmed suddenly opened fire from an opening with his AK-56 Rifle. Sepoy Ranjit Singh who was close to this opening, first fired into the hole, thereby injuring the militant and in a most daring act tried to pull out the rifle of the terrorist with one hand. The militant continued firing bursts and Sepoy Ranjit Singh sustained bullet injuries in his hand and stomach and made the supreme sacrifice. Even while falling down, Sepoy Ranjit Singh, with total disregard to personal safety not only injured the dreaded militant but continued firing which saved the lives of the rest of the search party from certain death.

Sepoy Ranjit Singh, thus displayed unflinching devotion to duty and exemplary courage at the cost of his own life.

15. 7431151 Sepoy Om Shiv Sharma,
Intelligence Corp. (Posthumous)

(Effective date of the award : 5 September 1994)

On specific information regarding anti national elements' hideout in area Kunthal in Jammu and Kashmir a cordon and search operation was organised. The cordon was established by 0530 hours on 05 September 94 by a composite force led by a Brigadier. Sepoy Om Shiv Sharma as the Intelligence OR was part of the Commander's protection party and was thus moving alongwith him when the search of the first house commenced. The militant who had been surprised by the effective cordon sensed the approach of the security forces and opened up with murderous hail of fire

on to the Commander's protection party. In this fullscale of fire, Sepoy Om Shiv Sharma was hit in his groin and fell down. Displaying indomitable courage, grim determination and paying scant attention to his personal injury, Sepoy Om Shiv Sharma sensing grave danger to the life of the Commander fired at the ANE who had charged outside the house and was spraying bullets all around. Sepoy Om Shiv Sharma killed the ANE with his effective fire. In spite of his life ebbing away, he carried on exhorting his colleagues in search operations and was a source of inspiration to all. Due to the critical wound sustained, he succumbed to his injuries later.

Sepoy Om Shiv Sharma, thus, displayed indomitable courage and spirit of self sacrifice.

16. Major Rajesh Kumar Sharma (IC-48241),
26 Punjab

(Effective date of the award : 6 September 1994)

On 05 September 94, at about 1830 hours a militant's house in village Buna Wadur was raided. The hiding militant threw grenades and brought down heavy volume of fire. In this fierce encounter, Major Rajesh Kumar Sharma stormed the house by climbing the roof and shot dead the Hizbul Mujahideen militant. Again on 06 September 94, while addressing village Doru, three militants who were in the paddy fields fired at our troops and ran inside the village. A party under Major Rajesh Kumar Sharma chased the militants for 500 metres. The militants fired back and entered the nearby house. Major RK Sharma's appeal to surrender was responded by indiscriminate firing which continued for about 45 minutes. The Officer decided to personally storm the house with one sepoy. Major Rajesh Kumar Sharma stormed the house from a window and killed the dreaded platoon commander of Hizbul Mujahideen and injured another militant. In the meanwhile, the third militant fired at the Officer and alongwith the injured militant jumped to the adjacent house. Major Rajesh Kumar Sharma with total disregard to personal safety also jumped on the roof of the house and followed them. During the fierce fight, the Officer under-erred by the hail of bullets coming on to him, charged and killed both the militants.

Major Rajesh Kumar Sharma, thus, displayed personal valour, excellent leadership qualities and unmatched professional skill.

17. Squadron Leader Tony Paul Nanda (17697-N),
Flying (Pilot)

(Effective date of the award : 15 September 1994)

Squadron Leader Tony Paul Nanda is on the posted strength of a Chetak/Cheetah Helicopter Flight, Air Force, since 17 January 94.

On 15 September 94, he was detailed to undertake a casualty evacuation mission in a Chetak Helicopter from Gota village in Riiasi district of J&K State. Being aware that the casualties were hit by bullets fired by Anti National Elements, he took due precautions in approaching and landing at the helipad located at a height of 6000' amsl.

He loaded the two casualties quickly and occupied the Pilot seat. The instant the rotors were engaged, the helicopter was fired upon from the hill and was hit. One bullet grazed Sqn Ldr Nanda's head. Bleeding profusely and in a dazed condition, he gathered his wits and decided that the best course of action was to get airborne.

He took off amidst a spray of bullets and selected the most suitable escape route. Even in the face of the grave danger, the safety of his helicopter and passengers was paramount to him. Despite his own injury, instead of landing at the nearest airfield he insisted that the aircraft be flown to Jammu, so that the casualty, could reach the civil hospital in time. The sheer professionalism, clarity of thought and exceptional courage displayed by Sqn Ldr TP Nanda under such dangerous circumstances is in keeping with the highest traditions of the Air Force.

Squadron Leader Tony Paul Nanda, thus, displayed courage, determination and dedication beyond the call of duty with utter disregard to his personal safety.

18. JC-183532 Naib Subedar Tarsem Singh,
19 Jammu and Kashmir Rifles (Posthumous)

(Effective date of the award : 23 September 1994)

Cordon and search operations under Naib Subedar Tarsem Singh were launched in a village in district Doda of Jammu and Kashmir on 23 September 94. At 0700 hours his search party came under fire from inside a house. Naib Subedar Tarsem Singh quickly organized close cordon of the house. He co-ordinated the fire support to pin down the militant and fired a rocket which partially destroyed the house.

At 1245 hours again the search party came under fire from another house. The troops immediately retaliated and returned fire. Small arms fire was not effective on the militant hiding inside the house. The Junior Commissioned Officer reacted to neutralize the effective fire and in order to save his men from danger he himself took the Rocket Launcher and went to a suitable location. While taking aim for firing the Rocket he was hit by a burst of militant's fire on his head. In spite of his fatal injuries he still fired the round which destroyed the house partially. His indomitable courage, presence of mind and grim determination resulted in the killing of the militant and saving the precious lives of his men.

Naib Subedar Tarsem Singh, thus, fought valiantly and attained martyrdom in performance of duty.

19. 455557 Sepoy Satpal Singh,
9 Mahar (Posthumous)

(Effective date of the award : 11 November 1994)

On receiving information of presence of a group of 10 armed militants in village Duda in Doda district of Jammu and Kashmir a battalion operation was planned to seek encounter with the group of militants.

Sepoy Satpal Singh was detailed as scout of a column. While the column was moving towards Urhna at 0600 hours on 11 November 94, it spotted 03 civilians, suddenly. On being challenged the civilians threw off their blankets and opened effective fire. Simultaneously the militants hiding in the adjoining wooded spur opened the fire from defiladed position. Sepoy Satpal Singh engaged the militants despite being exposed to their fire in the open. During the exchange of fire Sepoy Satpal Singh was fatally wounded. Still he continued inflicting casualties on militants and maintained contact with them till he succumbed to his injuries.

Sepoy Satpal Singh, thus, displayed conspicuous courage in the face of heavy odds and made the supreme sacrifice.

20. 411664 Rifleman Rama Shankar,
Assam Rifles (Posthumous)

(Effective date of award : 14 December 1994)

Rifleman Rama Shankar of 4th Assam Rifles, despite having returned back from a long patrol duty the previous evening, volunteered to go with the patrol 'Suraj' which was tasked to seek an encounter with the National Socialist Council of Nagaland (NSCN) undergrounds and kill/apprehend them.

At approximately 1010 hours on 14 December 1994, the patrol had an encounter with NSCN(S) hostiles in general area Sana Lok river in Manipur. The leading section came under heavy and accurate fire of undergrounds from a dominating feature. Rifleman Rama Shankar immediately charged the undergrounds alongwith his Commander. During the assault his Commander was mortally wounded. On seeing this, Rifleman Rama Shankar, with utter disregard to his personal safety, charged on the hostiles thus killing one hostile and prevented undergrounds from snatching away any arms, ammunition and equipment of his own comrades. In the process he was fatally wounded in his chest due to a Light Machine Gun burst. Notwithstanding the injury, he continued to move forward on his knees and subsequently on his belly firing his personal weapon till he breathed his last. His undaunting courage forced the hostiles to abandon their position in panic, leaving behind a large quantity of

arms, ammunition equipment, incriminating documents and dead bodies of their two colleagues.

Rifleman Rama Shankar, thus, displayed exemplary act of gallantry and made the supreme sacrifice while fighting the undergrounds.

**21. GS-160418F Driver Mechanical Equipment,
Kurra Ram (BRBD)**

(Effective date of the award : 24 February 1995)

Shri Kurra Ram was deployed on formation cutting on Galhar Santari road in militancy affected Doda District of Jammu and Kashmir.

Working on the road sector from KM 46 to 54 of Galhar-Sansari road is nerve breaking as it is an extremely dangerous zone due to the incessant flow of shooting stones and snow avalanches. To add to this, wind speeds and wind chill effect makes dozer operation a herculean task. Shri Kurra Ram volunteered for formation cutting operation on this stretch.

On 24 February 1995 at about 1100 hrs Shri Kurra Ram along his dozer was buried under a massive avalanche that injured him in the process. No sooner had he extricated himself than a second avalanche thundered down a few feet away. Shri Kurra Ram still kept his cool and exhibited rare courage. Even though the detachment incharge advised him to take rest and medical aid, the injured Shri Kurra Ram continued operating the dozer till he negotiated it a considerable distance away to safety. After receiving minimum first aid, he continued working relentlessly beyond the call of duty in sub-zero temperatures. It was due to his courage, vigour and zeal that the task of formation cutting in this location was achieved in time against all odds. He also set a rare example that invigorated his comrades.

Shri Kurra Ram, thus, displayed indomitable courage, valor, high sense of responsibility and fortitude under severe weather conditions with utter disregard to his personal safety.

**22. 13613971 Lance Havildar Rajbir
Para**

(Effective date of the award : 12 April 1995)

Lance Havildar Rajbir of the Parachute Regiment was part of the raid party tasked to apprehend Self Styled Deputy Home Minister Q Tuccu and Ex Deputy Superintendent of Police Kekhetto Sema, one of the four Battalion Commanders of National Socialist Council of Nagaland (Issac-Muivah) group in Nihoto village in Nagaland on night 11/12 April 1995.

At around 0610 hours on 12 April 1995, Self Styled Major Kekhetto Sema was spotted moving towards the suspected house. Lance Havildar Rajbir alongwith Major Basil Massey moved into apprehend the underground officer. Self Styled Major Kekhetto Sema seeing them rushing toward him fled with his bodyguard in a gypsy. Major Basil Massey immediately commanded another gypsy from the village and alongwith Lance Havildar Rajbir pursued the fleeing underground. After chasing the gypsy for approximately four kilometres, cross country through fields, Lance Havildar Rajbir fired from his moving vehicle, puncturing one of the tyres of the fleeing underground. Lance Havildar Rajbir saw Self Styled Major Kekhetto Sema lob a grenade towards Major Basil Massey who was advancing towards him. He at once shouted for Major Massey to stop as he sensed that Major Massey had not seen the grenade lobbed at him. Simultaneously Lance Havildar Rajbir leaped in front of Major Massey to shield him from the grenade blast and in the resultant explosion both were thrown to one side. Lance Havildar Rajbir though bleeding profusely from splinter injuries to his left temple, abdomen and both legs chased the juries to his left temple, abdomen and both legs chased the him dead. He was later identified as the bodyguard of Self Styled Major Kekhetto Sema.

Lance Havildar Rajbir, thus, displayed strong will dedication and courageous action, much beyond the call of duty.

**G. B. PRADHAN
Director**

No. 183-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of "Sena Medal/Army Medal" to the undermentioned personnel for acts of their courage :—

1. Colonel Tejpal Singh Mahil (IC-24374), Madras (Posthumous)
2. Colonel Manohar Singh Chauhan (IC-32779), VrC, Gorkha Rifles.
3. Lieutenant Colonel Mani Mukut Mitra, (IC-31811), Bihar.
4. Lieutenant Colonel Kamal Kumar Sharma (IC-34205), SC, Gorkha Rifles.
5. Lieutenant Colonel Alok Mehta (IC-24796), Artillery.
6. Major Mohan Kizhakke Veedu (IC-34609), Madras.
7. Major Deepak Kapahtia (IC-42449), Punjab.
8. Major Abhay Krishna (IC-38679), Rajputana Rifles
9. Major Kanwaljit Singh Dhaliwal (IC-40867), Air Defence Artillery.
10. Major Chander Mohan Shukla (IC-39386), Artillery.
11. Major Abhaya Vetekar (IC-45894), Sikh Light Infantry.
12. Major Apurva Verma (IC-39564), Army Aviation.
13. Major Mahendra Jogdand (IC-44759), Jammu and Kashmir Rifles.
14. Major Sahib Singh Sandhu (IC-43443), Artillery.
15. Major Sunil Kumar Pathak (IC-41305), Artillery.
16. Major P Nagesh Rao (IC-40680), Para.
17. Captain Sidharth Chatterjee (IC-42422), Parachute Regiment.
18. Captain Balraj Kakkar (IC-48547), Para
19. Captain Alok Jha (IC-48537), Para.
20. Captain Dhanwant Sharma (IC-50779), Artillery (Posthumous).
21. Captain Ajit Singh (RC-554), VrC, Artillery (Posthumous).
22. Captain Sanjib Medhi (MS-12543), Army Medical Corps.
23. Captain Ravi Datt Bhatt (RC-534), Kumaon.
24. Captain Rajesh Gopalakrishnan (IC-51220), Maratha Light Infantry.
25. Captain Janmej Singh (RC-564), Dogra.
26. Captain Yashpal Singh Ahlawat (IC-50080), Madras.
27. Captain Subrat Mishra (IC-50919), Armoured Corps.
28. Captain Yog Raj Pathak (IC-48385), Rashtriya Rifles.
29. Lieutenant Harbans Datt Thakiyal (RC-756), Jammu and Kashmir Rifles.
30. Second Lieutenant Neeraj Gupta (IC-51210), Jammu & Kashmir Light Infantry.
31. Second Lieutenant Udam Dixit (IC-51487), Rajputana Rifles.
32. Second Lieutenant Manoj Mathew (IC-51773), Sikh.
33. Second Lieutenant Subramaniam Velu Pandian (IC-52068), Mahar.
34. Second Lieutenant Sunil Shetty (SS-35834), Dogra Regiment.
35. JC-209161 Subedar Vijayan Paleri, Electrical and Mechanical Engineers (Posthumous).

36. JC-162131 Subedar Pundlik Kachu Tarihalkar, Maratha Light Infantry.
37. JC-212548 Naib Subedar Mane Kamlakar Ram, Maratha Light Infantry.
38. JC-438184 Naib Subedar K. Unnikrishnan, Madras
39. 2777119 Havildar Shedge Laxman Sitaram, Maratha Light Infantry (*Posthumous*).
40. 13748099 Havildar Ashok Thapa, Intelligence Corps (*Posthumous*).
41. 13738264 Havildar Lekh Raj, Jammu and Kashmir Rifles.
42. 2668821 Havildar Agya Ram, Grenadiers.
43. 14454662 Havildar Jagdish Chand, Artillery.
44. 13739843 Havildar Tank Bahadur Khand, Jammu and Kashmir Rifles.
45. 2300871 Havildar Ram Bahadur Chhetri, Assam Rifles (*Posthumous*).
46. 2669327 Havildar Jagdish Prasad Meena, Grenadiers.
47. 4056777 Havildar Kunwar Singh, Garhwal Rifles.
48. 13613958 Lance Havildar Karan Singh, Grenadiers.
49. 103570 Naik Nagina Ram, 10 Assam Rifles.
50. 13745163 Naik Ravinder Singh, Jammu and Kashmir Rifles.
51. 4457778 Naik Baldev Singh, Sikh Light Infantry (*Posthumous*).
52. 4173600 Naik Ram Kumar, Kumaon.
53. 3978326 Naik Narinder Kumar, Dogra.
54. 1375180 Naik Mookamaya Thevar, Thamilarasan, Engineers.
55. 2470997 Naik Gursahib Singh, Punjab.
56. 4060252 Naik Gokul Singh, Garhwal Rifles.
57. 4463906 Naik Hari Chand, Sikh Light Infantry.
58. 5174479 Naik Sallu Singh, 15 Kumaon.
59. 4062043 Lance Naik Megan Singh, Garhwal Rifles (*Posthumous*).
60. 2772955 Lance Naik Shete Pradip Kumar Umakant, Maratha Light Infantry (*Posthumous*).
61. 1384583 Lance Naik Chhambanda Machaiah Somaiah Engineers (*Posthumous*).
62. 19763 Lance Naik Khushal Singh Mehta, Assam Rifles (*Posthumous*).
63. 14466114 Lance Naik Shashidhar Phukan, Artillery.
64. 9087651 Lance Naik Naresh Kumar, Jammu and Kashmir Light Infantry.
65. 2595666 Sepoy Christopher A, Madras (*Posthumous*).
66. 2583964 Sepoy Madss Gurumaiah, Madras.
67. 2479098 Sepoy Balwant Singh, Punjab.
68. 2986035 Sepoy Jhawri Mal, Rajput.
69. 4467185 Sepoy Hari Singh, Sikh Light Infantry.
70. 9924288 Sepoy Tsering Sangroop, Ladakh Scouts.
71. 4270941 Sepoy Nikum Himat Rupchand, Bihar.
72. 4559191 Sepoy Pravas Chandra Das, Mahar.
73. 2479214 Sepoy Jaswant Singh, Punjab, (*Posthumous*).
74. 4470402 Sepoy Harjit Singh, Sikh Light Infantry (*Posthumous*).
75. 4562737 Sepoy Devi Singh, Mahar (*Posthumous*).
76. 411732 Rifleman Dinesh Prasad, Assam Rifles (*Posthumous*).
77. 4070530 Rifleman Digambar Singh, Garhwal Rifles (*Posthumous*).

78. 2301409 Rifleman Lalit Kumar Sangma, Assam Rifles.
79. 411307 Rifleman Manoj Kumar Baita, Assam Rifles.
80. 411564 Rifleman Om Bahadur Thapa, Assam Rifles (*Posthumous*).
81. 13618019 Paratrooper Raman Kumar Verma, Para.
82. 2683235 Grenadier Mohamad Ghaffar, Grenadiers.
83. 13689669 Guardsman Sudhir Kumar Ganju, Guards.

G. B. PRADHAN
Director

No. 184-Pres/95.—The President is pleased to approved the award of "Vayu Sena Medal/Air Force Medal" to 695654N Sergeant Jalindra Nath Pradhan for his acts of courage.

G. B. PRADHAN
Director

The 19th September 1995

No. 168-Pres/95.—The President is pleased to direct that the following addition shall be made in the Ordinance relating to the Uchh Tungta Medal in the President's Secretariat Notification No. 72-Pres/86, dated 12th September, 1986 Published in Part-I, Section 1 of the Gazette of India dated the 27th September, 1986 namely.

2. The following proviso shall be added as sub-clause (c) after the existing clause sixthly sub-clause (b) :—

(c) 'All personnel who died or sustained wounds leading to premature evacuation irrespective of the time limit of stay'. This will take effect from the date of issue.

G. B. PRADHAN
Director

No. 185-Pres/95.—The President is pleased to award the President's Home Guards and Civil Defence Medal for gallantry to the undermentioned officer :—

Name and Rank of the officer

Shri Radheyshyam (Posthumous)
Home Guard Volunteer No. 339,
Rajasthan.

Statement of services for which the decoration has been awarded

On the fateful night of 7th November, 1994 Shri Radheyshyam, Home Guard Volunteer was on Law and Order duties at Check Post Kardwala under Police Station Sadhulshar in Rajasthan. At about 19.30 hours Police Station Sadhulshar alerted all checkpoints on wireless about one incident of snatching of one motorcycle by three unknown miscreants at gun point in Hanumangarh. At about 19.45 hours of the same date, a motor cycle with rider and two pillion rider was spotted the checkpoint. When challenged, the occupants of the motorbike escaped in the adjoining cultivation field under the cover of darkness deserting the motor cycle. The Guards of the check post chased the persons and Shri Radheyshyam nabbed one of them while other members of Guards chased other two. The miscreants nabbed by Shri Radheyshyam struggled hard to get rid of the grip of the Home Guard Volunteer but failed. On seeing no other way for escape, the miscreants fired Shri Radheyshyam from point blank range from his pistol. Shri Radheyshyam even when succumbing to the bullet injury, did not loosened his grip and get hold of the miscreants. This led to the subsequent identification of all other miscreants and their arrest.

In this encounter Shri Radheyshyam, Home Guard Volunteer displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule-3 (i) of the rules governing the award of President's Home Guards and Civil Defence medals and consequently carries with it special allowance admissible under Rule-5 with effect from 7th November 1994.

G. B. PRADHAN
Director

No. 186-Pres/95.—The President is pleased to award the President's Fire Service Medal for gallantry to the under-mentioned Officers :—

Name and Rank of the Officers

Shri M. S. Dar,
Director,
Jammu & Kashmir Fire Service,
Jammu & Kashmir.

Shri G. N. Sofi,
Assistant Director,
Jammu & Kashmir Fire Service,
Jammu & Kashmir.

Shri L. A. Khan,
Assistant Director,
Jammu & Kashmir Fire Service,
Jammu & Kashmir.

Shri M. H. Lone,
Driver,
Jammu & Kashmir Fire Service,
Jammu & Kashmir.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

In the intervening night of 8th and 9th May, 1995, there was a devastating fire in the town of Charar-i-Sherif in Jammu & Kashmir. On receipt of a fire emergency call at 0050 hrs, Shri M. S. Dar, Director of Fire Service with his Assistant Directors rushed for the site of incident after despatching all fire fighting resources. At about 0230 hours, the response party was stranded at the Hospital crossing due to constant cross firing between the militants and the security forces which made the site of fire incident completely inaccessible. Shri M. S. Dar and his team of fire fighters lead to physically crawl on the ground to reach the site of fire amidst heavy firing inspite of some bullets hitting the appliances. The officers made a thorough recon of the situation and the surroundings and found the Shrine and the adjacent wooden structure of Khankah Mosque as the site of conflagration. Shri Dar, Director of Fire Service, Jammu & Kashmir, then took full operational command of the situation and made meticulous planning for operation. Shri Sofi, Assistant Director was entrusted to the laying of charged hose pipes from the posterior side of the Shrine and Shri L. A. Khan was made responsible for ensuring continuous supply of water. Shri Lone, Driver doubtlessly drove his fire appliances through such cross firing and arrived at the site of fire and effectively set the portable pumps into operation which continued for 80 long hours, under such adverse operational conditions. The indefatigable efforts of Shri Dar and his motivated and dedicated team of fire fighters saved the Shrine and its adjoining structures to the extent possible for more than 36 hours under such warlike conditions ignoring their personal safety.

In this incident Shri M. S. Dar, Director, Shri G. N. Sofi, Assistant Director, Shri L. A. Khan, Assistant Director and Shri M. H. Lone, Driver displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 3(i) of the rules governing the award of President's Fire Service medal and consequently carries with it special allowance admissible under Rule 5(a) with effect from 8th May 1995.

G. B. PRADHAN
Director

No. 187-Pres/95.—The President is pleased to award the Fire Service Medal for gallantry to the undermentioned officers :—

Name and Rank of the Officers

Shri R. S. Sodhi,
Assistant Director,
Jammu & Kashmir Fire Service,
Jammu & Kashmir.

Shri B. A. Alaie,
Sub-Officer,
Jammu & Kashmir Fire Service,
Jammu & Kashmir.

Shri G. M. Badoo,
Leading Fireman,
Jammu & Kashmir Fire Service,
Jammu & Kashmir.

Shri A. A. Bhat,
Fireman,
Jammu & Kashmir Fire Service,
Jammu & Kashmir.

Statement of Services for which the decoration has been awarded.

In the intervening night of 8th and 9th May 1995, when continuous cross firing between the militants and the security forces were going on, a fire emergency call was received from Charar-i-Sherif in Jammu & Kashmir informing a major devastating fire in the town. The fire response team headed by the Director of Fire Service rushed to the spot of incident and were stranded at the hospital crossing of the town because of hostile operational condition due to continuous firing made the site of incident completely inaccessible. Ignoring the difficulties and their personal safety, Shri B. A. Alaie, Sub-Officer accompanied by Shri G. M. Badoo, Leading Fireman and Shri A. A. Bhat, Fireman were the first to arrive at the site of the incident for the effective control of the fire which then engulfed the Shrine and its adjacent wooden Khankah Mosque. Amidst such hostile operational conditions, the aforesaid fire fighting team of Jammu & Kashmir Fire Service doubtlessly fought the fire for 36 long hours to save the shrine and its surrounding structures. Shri R. S. Sodhi, Assistant Director at that time took over the charge of fire control room and effectively coordinated all fire fighting manouvers for the success of the operation.

In this incident S/Shri R. S. Sodhi, Assistant Director, B. A. Alaie, Sub-Officer, G. M. Badoo, Leading Fireman and A. A. Bhat, Fireman displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule -3 (i) of the rules governing the award of Fire Service Medal and consequently carry with it special allowance admissible under Rule 5(a) with effect from 8th May, 1995.

G. B. PRADHAN
Director

No. 188-Pres/95.—The President is pleased to award Fire Service Medal for gallantry to the undermentioned officers :—

Name and Rank of the Officers

Shri S. Dhanapathy,
Fire Officer and Assistant Safety Officer,
Madras Port Trust,
Ministry of Surface Transport.

Shri A. Varadarajan,
Fireman,
Madras Port Trust,
Ministry of Surface Transport.

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On the early hours of 31st October, 1994, there was a major fire with sporadic explosions in the Steel Authority of India Plot of Marshelling Yard of Madras Port Trust. Some hazardous chemicals stock piled in the yard was water-reactant. Due to incessant rain, the water reactant chemicals was set ablaze which also caused explosions. At about 0205 hours of 31-10-94, on receipt of distress call, Shri S. Dhanapathy, Fire Officer and Assistant Safety Officer with fire crews of Madras Port Trust reached the site immediately, and found 5 of the 20 Ft. containers were on fire emanating poisonous smoke spreading towards the adjoining Central Industrial Security Forces Barracks and Sathyanagar Htments nearby.

Shri Dhanapathy assisted by Fireman Varadarajan immediately responded to the crisis without losing time and broke open one container on fire and extinguished the fire with special Dry Power Chemicals. In the meantime fire spreaded to the surroundings by the explosion of some chemical drums, but that did not deter S/Shri Dhanapathy and Varadarajan to raise to the occasion. Ardously with spraying water to the surroundings and using Foams, they controlled the fire and thus saved 32 other containers even working in such poisonous gas filled environment for such a long time risking their own life. In the process, both of them received severe burns for which they were later on treated in the Hospital for a long time.

In this incident Shri S. Dhanapathy, Fire Officer and Assistant Safety Officer and Shri A. Varadarajan, Fireman displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule-3 (i) of the rules governing the awards of Fire Service Medal and

consequently carry with it special allowance admissible under Rule 5(a) with effect from 31st October 1994.

G. B. PRADHAN
Director

LOK SABHA SECRETARIAT

(RCC BRANCH)

New Delhi-110001, the 19th September 1995

No. 4/2/91-RCC.—Shri Ram Nagina Mishra, Member, Lok Sabha has been nominated on 12 September 1995 to serve as a Member of the Parliamentary Committee to review the rate of dividend payable by the Railway Undertaking to the General Revenues as well as other ancillary matters in connection with the Railway Finance vis-a-vis General Finance in the vacancy caused by the resignation of Shri Ram Naik from the Membership of the Committee.

R. C. GUPTA
Under Secy.

(STANDING COMMITTEE ON FINANCE BRANCH)

New Delhi-110001, the 25th September 1995

No. 7/1/95/FC.—Shrimati Maragatham Chandrasekhar, Member of Lok Sabha, has been appointed as the Chairperson of the Standing Committee on Finance w.e.f. 22-9-95.

SATISH LOOMBA
Dy. Secy.

